लघुचित्र कला में वन्य-जीव

आनन्द कुमार सिंह
अल शाज़ फ़ात्मी

लघु चित्रकला में वन्य-जीव

लेखक -
डॉ. आनन्द कुमार सिंह
अल शाज़ फ़ात्मी

लघु चित्रकला में वन्य-जीव

कवर पृष्ठ

नायिका भेद, बूंदी शैली, लघुचित्र, राज्य संग्रहालय, लखनऊ

प्रकाशक — राज्य संग्रहालय, लखनऊ

प्रकाशन वर्ष — 2022

मूल्य — ₹ 350-/

मुद्रक : अवध पब्लिशिंग हाउस
8, पानदरीबा, लखनऊ, 0522-4007967

अनुसूची

प्राक्कथन

कला एवं संस्कृति के लिये विश्व विख्यात अवध क्षेत्र में चित्रकला का अपना विशिष्ट स्थान है। विगत 150 वर्षों से अवध एवं देश के अन्य क्षेत्रों की बहुमूल्य कलाकृतियों के संरक्षक के रूप में राज्य संग्रहालय, लखनऊ निरन्तर प्रयत्नशील है। कलाकृतियों के अधिग्रहण के साथ-साथ प्रदर्शन, शोध एवं प्रकाशन की ओर संग्रहालय अग्रसर है। राज्य संग्रहालय लखनऊ के चित्रकला संकलन में संग्रहीत दुर्लभ लघुचित्रों में चित्रित पशु-पक्षियों पर आधारित **''लघु चित्रकला में वन्य-जीव''** विषयक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

संग्रहालय के चित्रकला अनुभाग में जैन कल्पसूत्र, राधा-कृष्ण, रागमाला, रामायण, महाभारत एवं हिन्दू देवी-देवताओं पर आधारित लगभग 30 से अधिक शैलियों के लघुचित्र संग्रहीत हैं। इन लघुचित्रों में विभिन्न दृश्यों को प्राकृतिक वातावरण से सामंजस्य बनाते हुए चित्रित किया गया है। कतिपय लघुचित्रों में पशु-पक्षियों का सजीव चित्रण वैज्ञानिक शोध में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। इस पुस्तक के माध्यम से कतिपय लघुचित्रों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, जिसमें वन्य-जीवों का चित्रण है। मुगल शैली के प्रसिद्ध चित्रकार मंसूर द्वारा चित्रित काले हिरन से लेकर दिल्ली, मेवाड़, मारवाड़, दक्कन, बसोहली, कांगड़ा, बूंदी, कश्मीर आदि शैलियों में चित्रित विभिन्न लघुचित्रों में वन्य-जीवों को इस पुस्तक में प्रकाशित किया गया है। यहां चित्रित कतिपय लघुचित्रों में कई एक पशु-पक्षी यथा साइबेरियन क्रेन, बाघ, हाथी, बटेर, तेंदुआ, बब्बर शेर आदि दुर्लभ प्रजाति के हैं।

श्री मुकेश कुमार मेश्राम, प्रमुख सचिव, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश के मार्गदर्शन एवं संरक्षण में पुस्तक इस रूप में आ सकी है। हम उनके प्रति विशेष आभार व्यक्त करते हैं।

पुस्तक में प्रकाशित किये गये लघुचित्रों को उपलब्ध कराये जाने में चित्रकला अनुभाग की प्रभारी डॉ. मीनाक्षी खेमका का योगदान रहा है, जिसके लिये हम उनका आभार व्यक्त करते हैं।

पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले सम्बन्धित जन के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं। पुस्तक को इस रूप में प्रस्तुत करने में डॉ. मनोजनी देवी, श्री शारदा प्रसाद त्रिपाठी, श्री ज्ञान चन्द गोण्ड, श्री विजय कुमार मिश्र एवं श्री विजय कुमार अवस्थी का योगदान उल्लेखनीय रहा है। हम उनके प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं।

इस पुस्तिका का कोई भी भाग यदि पाठकों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा, तो निश्चित रूप से हम अपने प्रयास में सफल होंगे। यद्यपि इसे प्रकाशित करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है, तथापि कोई त्रुटि शेष हो, तो उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

अंत में पुस्तक को इस रूप में प्रकाशित करने के लिये अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ का हम धन्यवाद ज्ञापन करते हैं।

डॉ. आनन्द कुमार सिंह
अल शाज़ फ़ात्मी

यथा सुमेरुः प्रवरो नगानां यथाण्डजानां गरुडः प्रधानः ।।
यथा नाराणां प्रवरः क्षितीशस्तथा कलानामिह इचित्रकल्पः ।।

"जैसे पर्वतों में सुमेरू श्रेष्ठ है, पक्षियों में गरूड़ प्रधान है और मनुष्यों में राजा उत्तम है उसी प्रकार कलाओं में चित्रकला उत्कृष्ट है।"

भारत के परिप्रेक्ष्य में चित्रकला के प्राचीनतम नमूने प्रागैतिहासिक शैल चित्रों में मिलते हैं, जिसमें मिर्जापुर, भीमबेटका तथा बाघ की गुफाएं प्रमुख हैं। प्राचीन काल में शुंग काल से गुप्त काल तक अजन्ता की गुफाओं में सुन्दर चित्रकारी की गयी है। भारत में लघु चित्रकला की उत्पत्ति 750 ई. में पाल वंश से मानी जाती है। इस समय उत्तरी भारत में बुद्ध की जीवन गाथा पर आधारित छोटे-छोटे चित्र ताड़ पत्र पर बनाये जाने प्रारम्भ हुए, जिसमें चित्र के साथ कुछ पंक्तियाँ भी अंकित की जाती थी। इनका आकार छोटा होने के कारण इसे लघुचित्र की संज्ञा दी गयी। तत्कालीन धर्मगुरुओं द्वारा इन लघुचित्रों को धार्मिक उपदेश हेतु भी प्रयोग में लाया जाता था।

कालान्तर में पश्चिमी भारत में चालुक्यों के समय 960 ई. में जैन धर्म पर आधारित पोथियों पर चित्रकारी मिलती है। भारत में 12वीं शती. ई. में कागज के अविष्कार के बाद से ताड़-पत्र एवं भोज-पत्र से इतर कागज पर चित्र बनाने की प्रथा प्रारम्भ हुई, जो मूलतः पाण्डुलिपि के रूप में थी, परन्तु अभी भी वास्तविक लघुचित्र कला अस्तित्व में नहीं थी।

बौद्ध ग्रन्थों पर आधारित पाल युगीन लघुचित्र दबे हुए रंग के हैं एवं उनमें शारीरिक बनावट बहुत यथार्थ नहीं है, यद्यपि पश्चिमी भारत के राजस्थान, गुजरात व मालवा क्षेत्र में बने लघुचित्र जैन धर्म से प्रभावित थे, जिसमें चटक रंगों, अतिरंजित शारीरिक बनावट एवं सीधी लाइनें स्पष्ट रूप से दृष्टव्य हैं। 15वीं शताब्दी आते-आते लघुचित्रों में पश्चिमी छाप दिखाई पड़ने लगती है, जहाँ ताड़-पत्र के स्थान पर कागज का प्रयोग प्रारम्भ हो जाता है एवं शिकार तथा अन्य दृश्यों को चित्रित करने में सोने के रंगों के साथ नीले रंग का प्रयोग मिलने लगता है।

इन शैलियों का उद्गम मूल रूप से सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारकों से प्रभावित था।

लघु चित्रकला एक विशिष्ट प्रकार की कला है, जिसमें चित्रकार द्वारा ताड़-पत्र, काष्ठ, पत्ती, संगमरमर, हाथी दांत, हड्डी, कपड़ा, चरवा एवं विशिष्ट प्रकार के हाथ से बने कागज पर प्रेमपूर्वक विविध विषयों को उकेरा जाता है। इसे बनाये जाने में खनिज, शंख, सब्जियों, फूल आदि से निर्मित

प्राकृतिक रंगों तथा सोने व चांदी के बुरादे को प्रयोग में लाया जाता है। कागज पर चित्र बनाने से पूर्व इसे पत्थर से घिस कर चिकना कर देते हैं, जिससे कोई छिद्र आदि शेष न रह जाये।

लघुचित्र वास्तव में किसी देश के साहित्य, इतिहास व दैनिक जीवन के चित्रण का एक झरोखा है, जिसमें दरबार के दृश्य, युद्ध, प्रेमालाप, शबीह आदि विषयों पर केन्द्रित होकर चित्रों को उकेरा गया है। प्रकृति चित्रण यद्यपि कई एक शैलियों में मिलता है, परन्तु जानवरों का विस्तृत एवं सटीक चित्रण मुख्य रूप से मुगल शैली में ही मिलता है। मुगल शैली के लघुचित्रों में पशु-पक्षियों की सटीक शारीरिक बनावट एवं एक-एक बारीकी के कारण इसे कई बार वैज्ञानिक शोध के संदर्भ में भी प्रयोग में लाया जाता है, जिसमें विलुप्त हो चुके डोडो पक्षी का चित्र प्रमुख है।

विशिष्ट लघुचित्र शैली का उद्भव लोधी-सल्तन काल (1451-1526 ई.) से माना जाता है। इस काल में चित्रित पाण्डुलिपियों में दरबार के दृश्यों की प्रधानता देखने को मिलती है। यद्यपि लघुचित्र कला मुख्य रूप से मुगल काल में पुष्पित-पल्लवित हुई।

तकनीक :

लघुचित्र पारम्परिक टेम्परा तकनीक से बनाये जाते थे, जिसमें रंग को पानी एवं गोंद में मिलाकर चित्रकारी की जाती थी। पेड़ों से प्राप्त प्राकृतिक गोंद रंगों को बांधने का कार्य करती थी। सर्वप्रथम कागज़ अथवा कपड़ा या हाथी दांत पर काले/लाल रंग से आउट लाइन बनाते हैं, तदोपरान्त सफेद प्राइमर लगाने के पश्चात् इसे इतना घिसते हैं की अन्दर से आउट लाइन दिखाई पड़े। तत्पश्चात् दोबारा आउट लाइन कर सर्वप्रथम बैकग्राउण्ड एवं आसमान का रंग भरते हैं। इसके बाद पेड़-पौधों में और सबसे अन्त में पशु-पक्षी, मानवाकृति में रंग भरते हैं। इन चित्रों को बनाने में रंगों को खनिज, ओकरे आदि से बनाते हैं। इण्डिगो, लाल, हरा आदि रंग सब्जियों से प्राप्त करते हैं। लैक डाई एवं लाल कारमाइन लाल चीटियों से बनाया जाता है। शंख व जिंक से सफेद रंग निकलता है। लैम्प ब्लैक एवं बर्न आइवरी से काला रंग मिलता हैं। आम की पत्ती एवं गौमूत्र से पीला रंग बनाया जाता है। अधिक सुन्दर बनाने हेतु स्वर्ण एवं चांदी के रंगों का भी प्रयोग किया जाता है। टेरोवर्टे, मैलाकाइट एवं वर्डीग्रिज़ (ज़ंगाल) को हरे रंग हेतु प्रयुक्त किया जाता है। बबूल एवं नीम की गोंद का प्रयोग रंगों का मिश्रण बनाने में करते हैं। गिलहरी, खरगोश आदि के बाल से बनी सुन्दर एवं उत्कृष्ट प्रकार की कूची से चित्रकारी की जाती थी।

इस पुस्तक में वन्य-जीवों की प्रधानता वाली कुछ शैलियों का वर्णन है एवं उनके कुछ लघुचित्रों, जिसमें वन्य-जीवों का सजीव चित्रण है, को दिखाने का प्रयास किया गया है।

पहाड़ी शैली :

राजस्थान में जिस समय राजस्थानी शैली का प्रारम्भ हो रहा था, उसी समय उत्तरी भारत के पहाड़ी क्षेत्र में राजपूत राजाओं के आश्रय में आये चित्रकारों द्वारा सुन्दर पहाड़ों की वादियों में पहाड़ी शैली का जन्म हुआ। चित्रकारों के कला-सृजन में स्वच्छन्दता एवं भावाभिव्यक्ति का उत्कृष्ट रूप एवं पराकाष्ठा पहाड़ी लघुचित्रों में अपनी मौलिकता के साथ दिखाई देता है। सम्पूर्ण पहाड़ी चित्रों की पृष्ठ-भूमि में श्रृंगार रस की प्रधानता है। पहाड़ी चित्रकारों ने अपने चित्रों को शास्त्रीय सांचे में नहीं ढाला है, वरन् स्वछन्द रूप से हृदयोंद्गारों की प्रेमाभिव्यक्ति की है। चित्रों में सजीवता लाने के उद्देश्य से बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रकृति एवं वन्य-जीवों का चित्रण किया गया है। वस्तुतः पहाड़ी चित्रकारों के चित्र सृजन का प्रेरणा स्रोत संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य की मध्यकालीन रीति विषयक कृतियां रही हैं। इसमें गीत-गोविन्द, रामायण, महाभारत, अभिज्ञानशाकुन्तलम, कविप्रिया, रसिकप्रिया, रसमंजरी, सुख-सागर, बिहारी सत-सई आदि ग्रन्थ मुख्य हैं। पहाड़ी कला की प्रमुख शैलियां गुलेर एवं बसोहली हैं। गुलेर के अन्तर्गत उपशैलियों कांगड़ा एवं गढ़वाल के चित्रों का अध्ययन किया गया है। बसोहली के अन्तर्गत जम्मू, कुल्लू, मण्डी, चम्बा तथा नूरपूर आदि के लघुचित्र हैं। ये चित्र 17वीं-19वीं शताब्दी के मध्य बनाये गये हैं, जिसमें मुख्य रूप से नीले, पीले, लाल और सफेद रंगों की अधिकता है। बसोहली चित्रों में चित्र के चारों ओर पतला पट्टीनुमा हाशिया, जिसमें मुख्य रूप से लाल तथा पीला रंग भरा जाता था, बनाया गया है। यद्यपि कांगड़ा शैली में लाल, पीले रंगों में लेख अंकित है। रसमंजरी व गीत गोविन्द पर आधारित चित्रों में संस्कृत में छंद भी लिखे हैं।

प्रकृति में अलग-अलग प्रजातियों के वृक्षों को अलंकारिक योजना के साथ प्रस्तुत किया गया है। बारह मासा चित्रण में प्रकृति के सुरम्य वातावरण, सघन वन, पुष्प एवं पशु-पक्षियों को मनोहारी रूप में चित्रित किया गया है। इस शैली के चित्र हस्त निर्मित कागज पर बनाये गये हैं। रेखांकन के पश्चात इन चित्रों पर सफेद रंग की एक परत चढ़ाई जाती थी।

अवध शैली :

18वीं शती ई. में लेटर प्रोविन्शियल लघुचित्र शैली का उद्भव हुआ, जिसमें अवध शैली प्रमुख है। मुगल काल के अन्तिम चरण में राजघरानों से पलायन किये चित्रकारों ने अयोध्या (फ़ैजाबाद) व लखनऊ में अवध शैली की नींव रखी। इस शैली के चित्रकारों में गजराज, आसफ अली, गुलाम मुस्तफा, हसन अली आदि ने पोर्ट्रेट, राजदरबार दृश्य, धार्मिक अनुष्ठान, सामान्य जन-जीवन, रास-लीला, नृत्य व संगीत आदि विषयों के अतिरिक्त प्रकृति का भी सजीव चित्रण किया है।

लाइन ड्राइंग, स्केचिंग में हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों, कृष्ण-लीला, राग-माला आदि विषयों पर बनाये गये लघुचित्र में आयल कलर के स्थान पर टेम्पेरा का प्रयोग मिलता है। अवध शैली के लघुचित्र तकनीक एवं प्रकार के आधार पर मूलतः दो श्रेणी में विभाजित किये जा सकते हैं : प्रथम श्रेणी में मुगल व राजपूत शैली का मिश्रण है, जो 1750-1800 ई. के मध्य बनाये गये हैं, द्वितीय श्रेणी के लघुचित्र में यूरोपियन शैली की प्रधानता है, जिसकी उत्पत्ति नवाब शुजाउद्दौला के समय से मानी जाती है। यद्यपि दोनों ही प्रकार के लघुचित्र एक साथ बनाये जा रहे थे, परन्तु कालान्तर में अवध शैली के लघुचित्र में भारतीय-ब्रिटिश प्रभाव की प्रधानता रही है एवं यही अवध शैली की पहचान बनी। नवाब आसफ-उद-दौला एक कला प्रेमी शासक था, जिसने कई एक चित्रकारों को राज्याश्रय दिया। यद्यपि इस क्षेत्र में अधिकतर चित्र हाथ से बने कागज पर बने, परन्तु कुछ पोर्ट्रेट हाथी दांत के चौकोर, अण्डाकार व आयताकार टुकड़ों पर आयल कलर से भी बनाये गये हैं।

कम्पनी शैली :

कम्पनी शैली के लघुचित्र मुख्य रूप से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों की शरण में काम कर रहे चित्रकारों द्वारा बनाये गये लघुचित्र हैं, जिसमें पश्चिमी कला के समावेश को स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है। पश्चिमी कला के गुणों तथा रंगों का चयन दृश्यात्मक सटीकता, संयोजन आदि को इस सीमा तक समायोजित किया गया है कि कुछ एक लघुचित्र छायाचित्रों से प्रेरित हैं। कम्पनी शैली के लघुचित्र की प्रमुख विशेषता है कि मुख्य चित्र को उभारने के उद्देश्य से यह निष्प्रभ पृष्ठभूमि में बनाये जाते थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी व कुछ अंग्रेज शासक जो प्रकृति के अध्ययन में विशेष रूचि रखते थे, उनके द्वारा छोटे-छोटे चिड़ियाघर स्थापित किये गये। यहां संरक्षित पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों के चित्रण हेतु चित्रकारों को नियुक्त किया गया, जिनके द्वारा विभिन्न एल्बम बनाये गये। इस शैली में कुछ विचित्र पशुओं का भी चित्रण किया गया है, जिसमें ऊँट, घोड़ा आदि पशुओं के शरीर के विभिन्न अंगों को भिन्न-भिन्न पशु-पक्षियों से चित्रित किया गया है।

सन् 1773 ई. में सर इलिजाह इम्पेय भारत के मा. सर्वोच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश नियुक्त होकर फोर्ट विलियम, कलकत्ता आये। उनकी पत्नी मेरी इम्पेय प्राकृतिक इतिहास में विशेष रूचि रखती थीं। तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग की मदद से श्रीमती इम्पेय ने भारतीय एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया के पशु-पक्षियों का एक छोटा चिड़ियाघर स्थापित किया। वर्ष 1777 ई. में मेरी ने अपने संग्रह के भारतीय व विदेशी जीव-जन्तुओं एवं पेड़-पौधों के चित्रण हेतु शेख-ज़ैन-उद्-दीन, भवानी दास एवं राम दास नामक चित्रकारों की नियुक्ति की, जिनके द्वारा लगभग 362 प्रकार के लघुचित्र बनाये गये, जो इम्पेय चित्रावली (एल्बम) के नाम से विश्व विख्यात हैं। इन लघुचित्रों में अधिकांश पर फारसी में चित्रकार का नाम व चित्र का शीर्षक अंकित

है। इसके अतिरिक्त मेरी इम्पेय ने अंग्रेजी में चित्र का संक्षिप्त वर्णन भी किया है। कालान्तर में यह एल्बम शोधकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ के रूप में विख्यात हुआ।

मुगल शैली :

इतिहासकारों के अनुसार 16वीं शती ई. में मुगल साम्राज्य के उदभव से लघुचित्र शैली में एक नए युग का आरम्भ हुआ। इस समय राज्याश्रय में चित्रशालायें स्थापित हुईं एवं निपुण चित्रकारों द्वारा फारस शैली से प्रभावित चित्रित पाण्डुलिपि, एल्बम, पोर्ट्रेट, कोर्ट दृश्य एवं अन्य विषयों पर आधारित लघुचित्र बनाये गये, जिसमें कालान्तर में भारतीय अवंयव भी सम्मिलित हुए। फूल-पत्ती एवं पशु-पक्षियों के अंकन से युक्त सुन्दर बार्डर इस शैली के लघुचित्रों की विशेषता है।

चित्रकारों द्वारा धार्मिक सांस्कृतिक व काल्पनिक ग्रन्थों पर आधारित विभिन्न देवी-देवताओं, कृष्ण-लीला, राग-माला, बारह-मासा आदि विषयों पर लघुचित्र बनाये गये। मुगल काल में चित्रकारों को राजकीय सम्मान के साथ एक पहचान भी मिली एवं बड़े चित्रकारों यथा अब्दुस्समद, मंसूर आदि ने अपना उत्कृष्ट चित्र संग्रह एक चित्रावली (एल्बम) के रुप में तैयार किया, परन्तु पहाड़ी व राजस्थानी एवं अन्य क्षेत्र के चित्रकार गुमनाम रहे।

मुगल लघुचित्र शैली मूलतः फारसी एवं भारतीय चित्रकला का मिश्रण है। यह जानना रुचिकर है कि फारसी चित्रशैली मूलरूप से चीनी लघुचित्र शैली से प्रभावित थी। मुगल लघुचित्र शैली 16वीं से 17वीं शताब्दी ई. के मध्य प्रचलन में आयी।

मुगल बादशाह हुमायूँ काबुल से आते हुए फारस से चित्रकार अब्दुस्मद एवं मीर सैय्यद अली को अपने साथ ले आया था जिन्होंने ईरानी शैली के अन्तर्गत 'हिरासत कलम' प्रकार के लघुचित्र बनाये और 'हम्ज़ा नामा' चित्रित किया। अकबर के समय ईरानी शैली का स्थान भारतीय शैली ने ले लिया एवं इस समय ऐतिहासिक इमारत व व्यक्ति चित्र (Portrait) विशेष रूप से बनाये गये।

मुगल शासन काल में यद्यपि लघुचित्र बनाने की परम्परा बाबर के समय से ही व्याप्त थी एवं अकबर के शासन काल में तीव्र गति से इसका विकास हुआ। जहाँगीर एक शासक होने के साथ-साथ प्रकृति प्रेमी भी था, जिसने अपने शासनकाल में कुशल विशेषज्ञों के पर्यवेक्षण में देश-विदेश के पशु-पक्षियों से युक्त निजी चिड़ियाघर स्थापित कराया। चिड़ियाघर में संरक्षित देश-विदेश के विभिन्न पशु-पक्षी को उत्कृष्ट पेंन्टिग का चित्र संग्रह भी जहाँगीर ने तैयार कराया, जिसमें मात्र सुन्दरता हेतु जीवों का चित्रण न कर उनका यथार्थ चित्रण भी किया गया है। जहाँगीर द्वारा अपने संस्मरण ''तुजुक-ए-जहाँगीर'' में वर्तमान शासकीय परिस्थितियों के साथ प्रकृति का भी सजीव वर्णन किया गया है। इस पाण्डुलिपि में उस्ताद मंसूर, जिन्हें उत्कृष्ट चित्र बनाने हेतु

"नादिर-अल-अस्र" की उपाधि प्रदान की गई थी के द्वारा उत्कृष्ट लघुचित्र बनाये गये हैं। इस समय के लघुचित्र अत्यन्त यथार्थ हैं, जिन्हें वैज्ञानिक शोध में सन्दर्भ (Reference) के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है। जहाँगीर की कोर्ट में वर्ष 1621 ई. में एक ज़ेब्रा लाया गया। इसके पूर्व किसी ने भारत में ज़ेब्रा पशु को नहीं देखा था। इसे देखकर यह अनुमान लगाया गया कि कदाचित किसी घोड़े को श्याम व श्वेत रंग से रंग दिया गया है, परन्तु बाद में शासक को जब यह ज्ञात हुआ कि ज़ेब्रा स्तनधारियों की एक प्रजाति है, तो इस काल के चित्रकारों द्वारा ज़ेब्रा का जीवन्त चित्रण किया गया।

जहाँगीर के काल में चित्रित पशु-पक्षियों के विभिन्न लघुचित्र जन्तु विज्ञान के क्षेत्र में अतिमहत्वपूर्ण हैं। डोडो नामक पक्षी बत्तख प्रजाति के क्रमिक विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। डोडो पक्षी का जीवन्त एवं यथार्थ चित्रण मुगल चित्रकार उस्ताद मंसूर द्वारा किया गया है, जिसके आधार पर उक्त पक्षी को पहचाना जा सकता है, क्योंकि वर्तमान में यह पक्षी वनों से विलुप्त हो चुका है। इस समय बनाये गये चित्रों में रंगों का संयोजन बहुत ही संतुलित है एवं पशु-पक्षियों के एक-एक बाल व पंख को बड़ी ही बारीकी के साथ चित्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त आंख, कान, पूंछ (दुम) एवं शारीरिक बनावट का यथार्थ चित्रण किया गया है। यह चित्र मात्र सुन्दरता व शारीरिक बनावट ही नहीं, अपितु पूर्ण भाव के साथ बनाये गये हैं। कुछ कलाकारों द्वारा अतिकाल्पनिक (Super imaginary) कृतियों को भी बनाया गया है, जिसमें किसी एक जानवर के शरीर को कई एक पशु-पक्षियों से मिलाकर बनाया गया है।

मुगलकाल के चित्रकारों द्वारा विविध विषय वस्तुओं यथा भवन, प्राकृतिक चित्रण, पशु-पक्षी, युद्ध, शिकार, राजदरबार, राजघराने के पोर्ट्रेट (शबीह) का चित्रण किया गया है। अनूप छत्तर, चैत रमन, इनायत, बिछितर आदि शाहजहाँ के काल के प्रमुख चित्रकार हैं। जहाँगीर (1569-1627 ई.) के समय चित्रकार द्वारा पशु-पक्षियों व प्रकृति का विस्तृत एवं सटीक चित्रण किया गया।

राजस्थानी शैली :

मुगल सल्तनत के पतन के पश्चात् चित्रकार राजस्थान के राजघरानों के सम्पर्क में आये एवं उन्होंने वहां एक नयी राजस्थानी लघुचित्र शैली की नींव रखी, जिसमें दक्कन व मुगल शैली के साथ-साथ चित्रकारों द्वारा कुछ नवीन प्रयोग भी किया गया। चित्रकारों ने छोटे-छोटे पहाड़ी, राजपूत, दक्कनी राजाओं एवं सूबेदारों के दरबार में आश्रय लिया, जिसके फलस्वरूप कुल्लू, गुलेर, कांगड़ा, बसोहली, आमेर, बूंदी, कोटा, दक्कन आदि शैलियों की उत्पत्ति हुई। प्रत्येक राजपूत शैली की अपनी एक विशेषता है, जिसके आधार पर इसे पहचाना जा सकता है।

राजस्थानी शैली के लघुचित्रों में पृष्ठभूमि अत्यधिक सुन्दर बनायी जाती है इनमें रंगों का चयन करते समय उनकी विषमता तथा प्रभाव का विशेष

ध्यान रखा गया है। रंगों को तैयार करने में कई सप्ताह का समय लगता था इसके पश्चात काफी महीन व उत्कृष्ट प्रकार की कूंची का प्रयोग चित्र बनाने में किया जाता था। कागज़ के अतिरिक्त चित्रकारों द्वारा हाथी दाँत एवं कपड़े आदि पर भी चित्रकारी की गई है। लघुचित्र की छोटी से छोटी आकृति को भी बड़ी बारीकी से बनाया गया है। प्रथम दृष्टया यह लघुचित्र सुंदरता के प्रतीक दिखते हैं, परन्तु ध्यानपूर्वक देखने पर प्रत्येक भाग अपने आप में अद्‌भुत अनुभूति देता है।

लगभग 17वीं-18वीं शती ई. में बने यह लघुचित्र अधिकतर कृष्ण-लीला, प्रेम प्रसंग, रामायण, महाभारत एवं अन्य पौराणिक ग्रन्थों, बारह-मासा, नायिका भेद आदि पर आधारित है। राजस्थानी शैली के अनेक केन्द्र स्थापित हुए, जिसमें मारवाड़, मेवाड़, किशनगढ़, अम्बर, बूंदी-कोटा, कांगड़ा, हड़ोती, कुल्लू आदि प्रमुख है। मुगल शासकों की तरह राजपूत शासकों ने भी चित्रकारों को राज्याश्रय दिया।

खनिज, सोना व चांदी के बुरादों तथा सब्जियों व फूलों के प्राकृतिक रंगों से गिलहरी के बाल से बने बनी कूंची (ब्रश) का प्रयोग कर अत्यन्त ही बारीकी से मनमोहक दृश्य बनाये गये हैं। जिसमें नदी, घने जंगल, घास के मैदान, पशु-पक्षियों आदि का बहुत ही मनोरम दृश्य चित्रित किया गया है।

कश्मीर शैली :

कश्मीर शैली के लघुचित्र मुख्य रूप से कई एक शैलियों का मिश्रण है। आरम्भिक काल में इसमें फारस शैली की प्रधानता मिलती है। कालान्तर में मुगल शैली व पहाड़ी शैली के कुछ गुण इसमें सम्मिलित हुए। कहीं-कहीं पर पर बौद्ध कला का भी प्रभाव मिलता है। अन्य शैलियों के विपरीत यह राजमहल की चहारदीवारी तक सीमित न रह कर जनसामान्य के मध्य भी प्रचलित रही। सामान्य रूप से इसे लोग पूजा-पाठ आदि अनुष्ठान में प्रयोग में लाते थे। कश्मीर शैली के चित्र अधिकतर धार्मिक ग्रन्थों यथा-भागवत पुराण आदि पर आधारित है। इस शैली में लोक कला का भी मिश्रण है। कश्मीर शैली जिसमें लघुचित्रों का कलात्मक बार्डर बहुत ही घनी कलाकारी एवं प्रकृति चित्रण में रंगों व माप आदि की सतर्कता की कमी दिखाई पड़ती है। चित्रण करते समय सुन्दर बार्डर एवं दृश्यों के अंकन हेतु यथावश्यक भागों में विभाजित किया जाना कश्मीरी शैली की विशेषता है।

पं.सं. : 18.100

शैली : कश्मीर शैली

विषय : शव पर नृत्य करती देवी

माप : 33x24.5 से.मी.

दो हाथों में नर मुण्ड लिये देवी काली शव के ऊपर नृत्य मुद्रा में है। देवी एक हाथ में कटोरा लिये रक्तपान कर रही है। दोनों नर मुण्ड से टपकते हुए रक्त को दो सियार (Jackal) पी रहे हैं एवं कौवे (Common Crow) का झुण्ड देवी के चारों ओर मंडरा रहा है।

कौवा

सियार
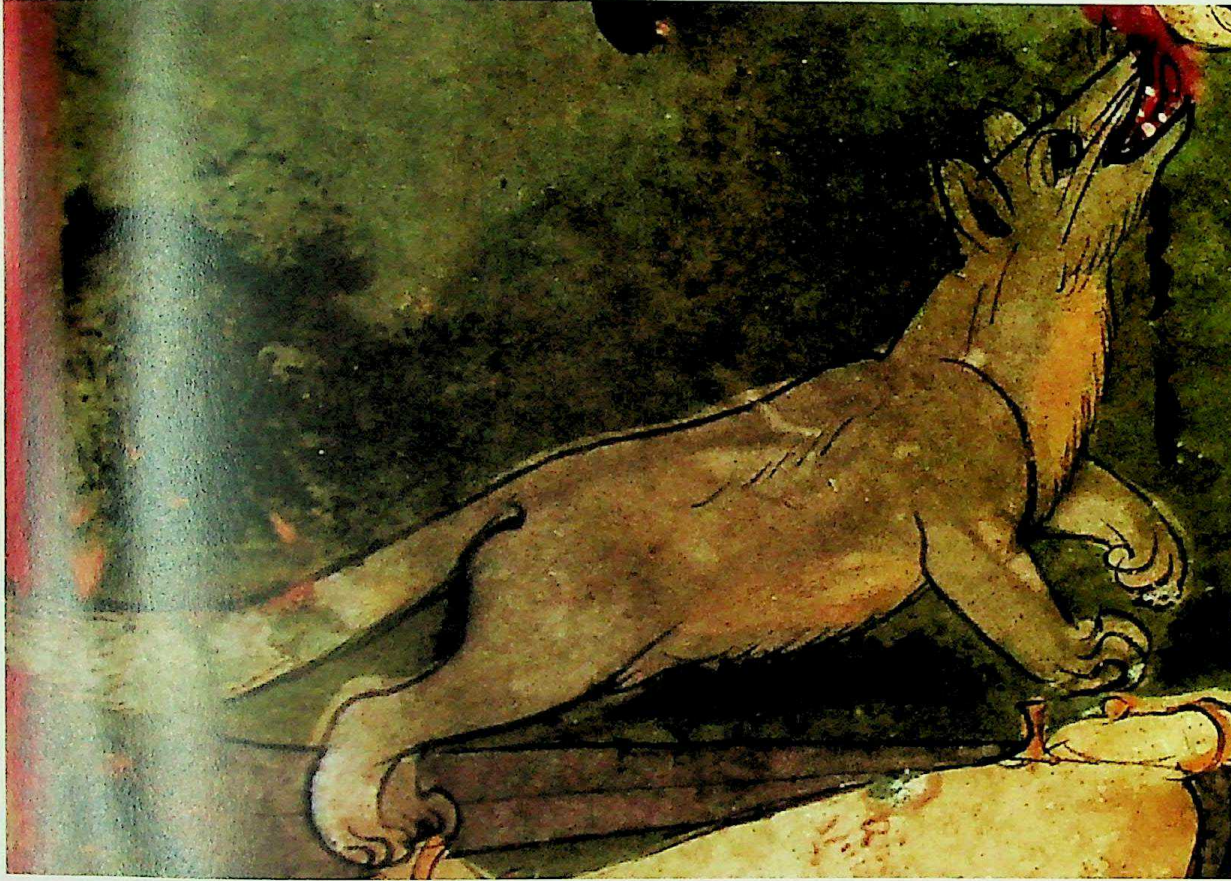
पं.स. : 26.199

शैली : कम्पनी शैली

विषय : दो पक्षी

माप : 46.5x32.5 से.मी.

कम्पनी शैली की विशेषता को प्रस्तुत करते हुए इस लघुचित्र में दो पक्षियों का सुन्दर व सटीक चित्रण किया गया है। ऊपर बनाया गया पक्षी हुदहुद (Common Hoppoe) एवं नीचे की ओर उत्तरी अमेरिका में पाया जाने वाला पक्षी श्राइक (Northern Shrike) है।

हुदहुद

श्राइक

पं.सं. : 21.138

शैली : मुगल शैली

विषय : काला हिरन

माप : 21x17 से.मी.

मुगल काल के मशहूर कलाकार उस्ताद मंसूर द्वारा चित्रित एक उत्कृष्ट कलाकृति है। चित्रण में पशु की शारीरिक रचना अत्यधिक सटीक एवं रंगों का संयोजन संतुलित है। सुन्दर पुष्प लताओं से सज्जित स्वर्ण बार्डर भी आकर्षण का केन्द्र है। लघुचित्र में काला हिरन (Black Buck) दर्शाया गया है।

काला हिरन

पं.सं. : 26.200

शैली : अवध शैली

विषय : अड्डे पर बैठा पक्षी

माप : 25x16 से.मी.

यह एक अतिमहत्वपूर्ण लघुचित्र है, जिसमें एक सफ़ेद कौवे (Albino Common Crow) को अड्डे पर बैठे हुए दिखाया गया। चित्र के चारों ओर बना बार्डर अवध शैली की विशेषता है। कौवे की चोंच खुली है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी बंजर जमीन पर यह पक्षी पानी की खोज में बैठा है।

सफेद कौवा

पं.सं. : 32.239

शैली : सिख शैली

विषय : नायिका भेद

माप : 30x24 से.मी.

लघुचित्र में नायक को बगीचे में अपने सेवकों के साथ बैठे हुए चित्रित किया गया है। छत पर अपनी सहेलियों के साथ खड़ी नायिका को हाथ में जमधर लिये नायक निहार रहा है। अतिसुन्दर इमारत के चित्रण से युक्त इस लघुचित्र का बार्डर विशेष रूप से दृष्टव्य है। बार्डर में चकोर (Grey Partridge) एवं सारस (Sarus Crane) को बड़े ही सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है।
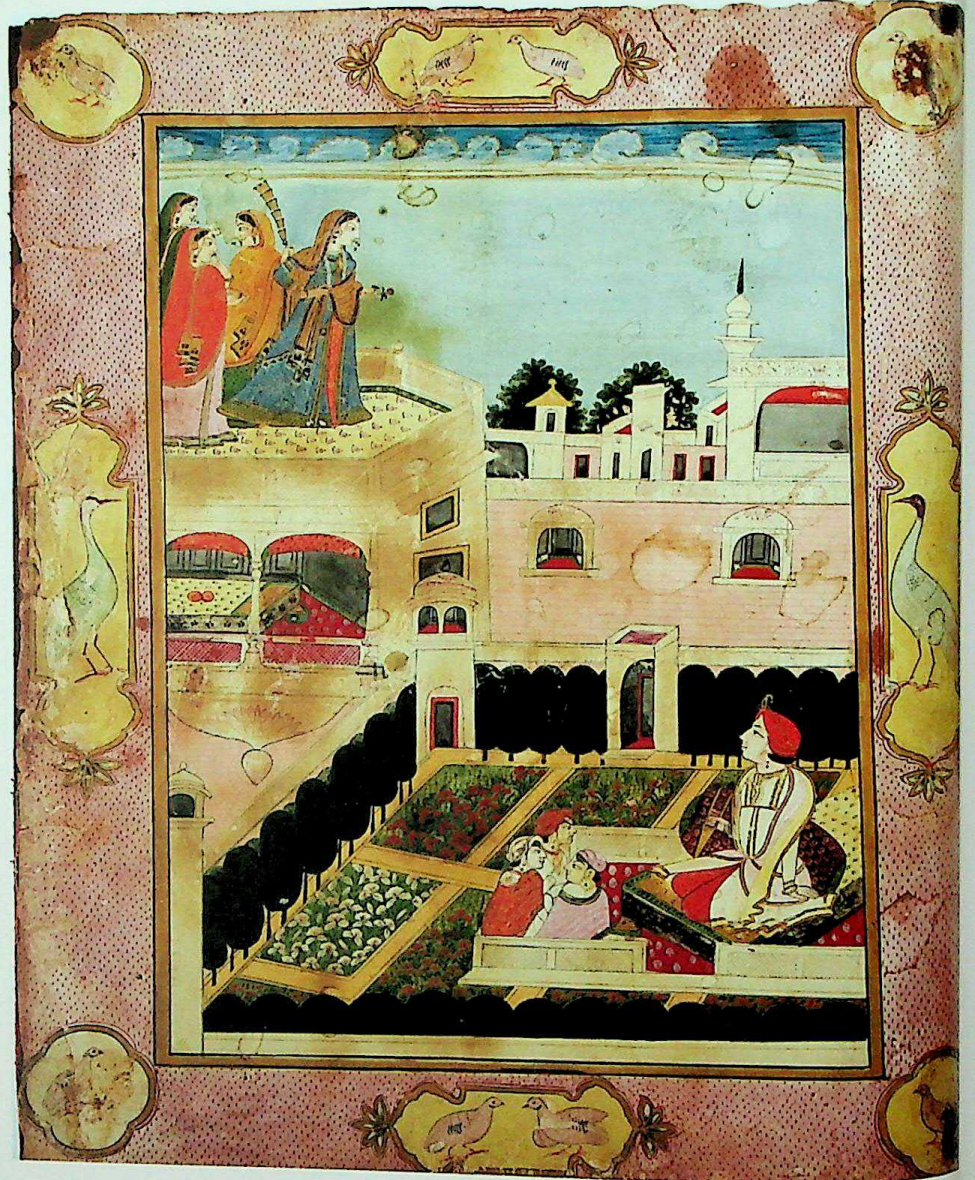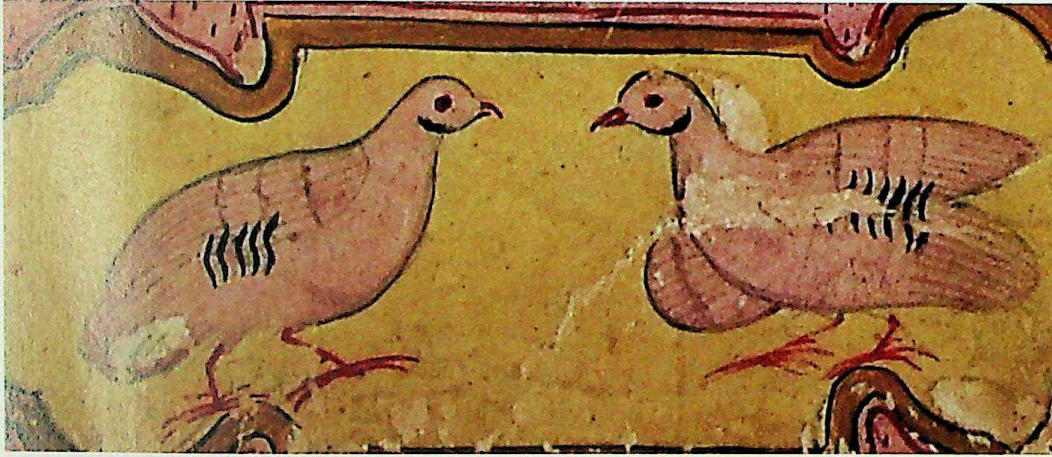
चकोर
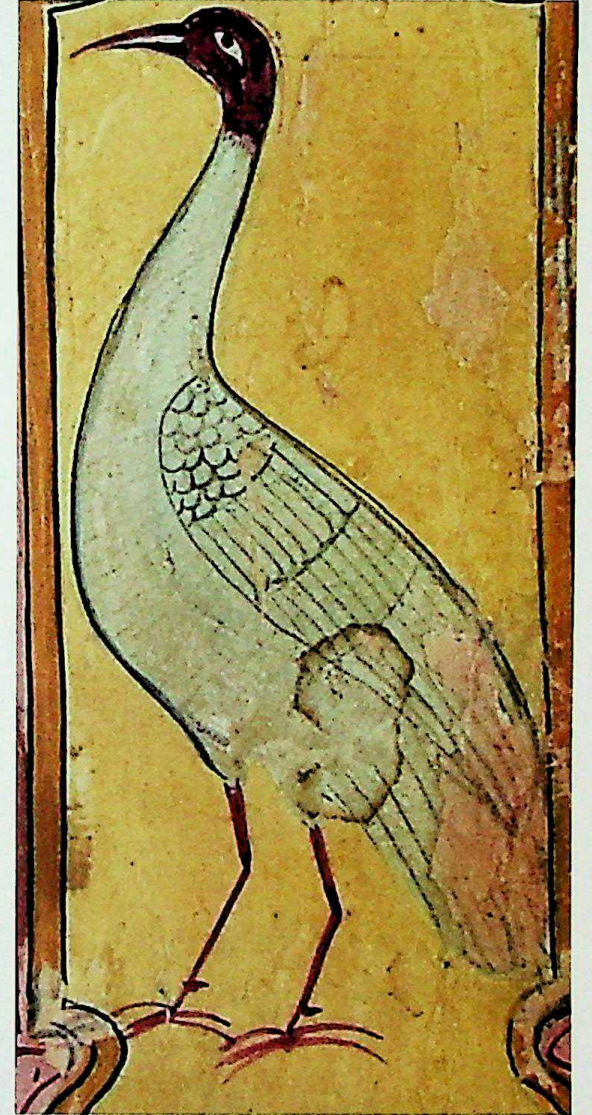
साइबेरियन सारस

पं.सं. : 40.244

शैली : कम्पनी शैली

विषय : हुदहुद

पेड़ के तने पर बैठे हुदहुद पक्षी (Common Hoppoe) का यह बहुत ही सजीव चित्रण है, जिसमें पक्षी की चोंच खुली हुई है एवं सिर पर पंखों का ताज है।

हुदहुद
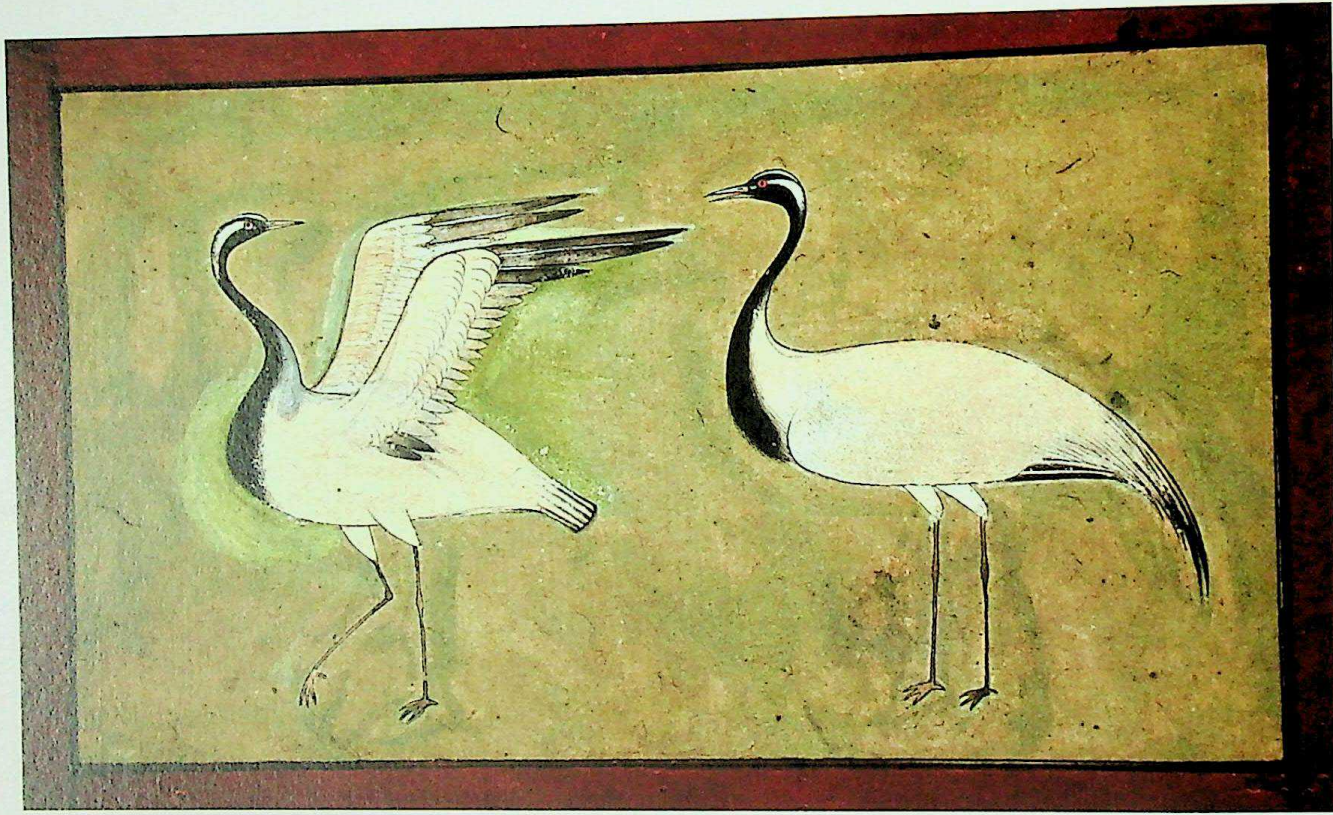
पं.सं. : 40.87

शैली : मुगल शैली

विषय : दो क्रेन

माप : 36.5x26.5 से.मी.

तिब्बती बौद्ध अनुयायियों द्वारा पवित्र माने जाने वाले काली गर्दन वाले बगुले (Black Necked Crane) का एक जोड़ा चित्रित है, जिसमें एक पक्षी दूसरे को निहार रहा है एवं उड़ने की मुद्रा में है, जबकि दूसरा पक्षी बड़े ही शांत भाव से उसे देख रहा है।
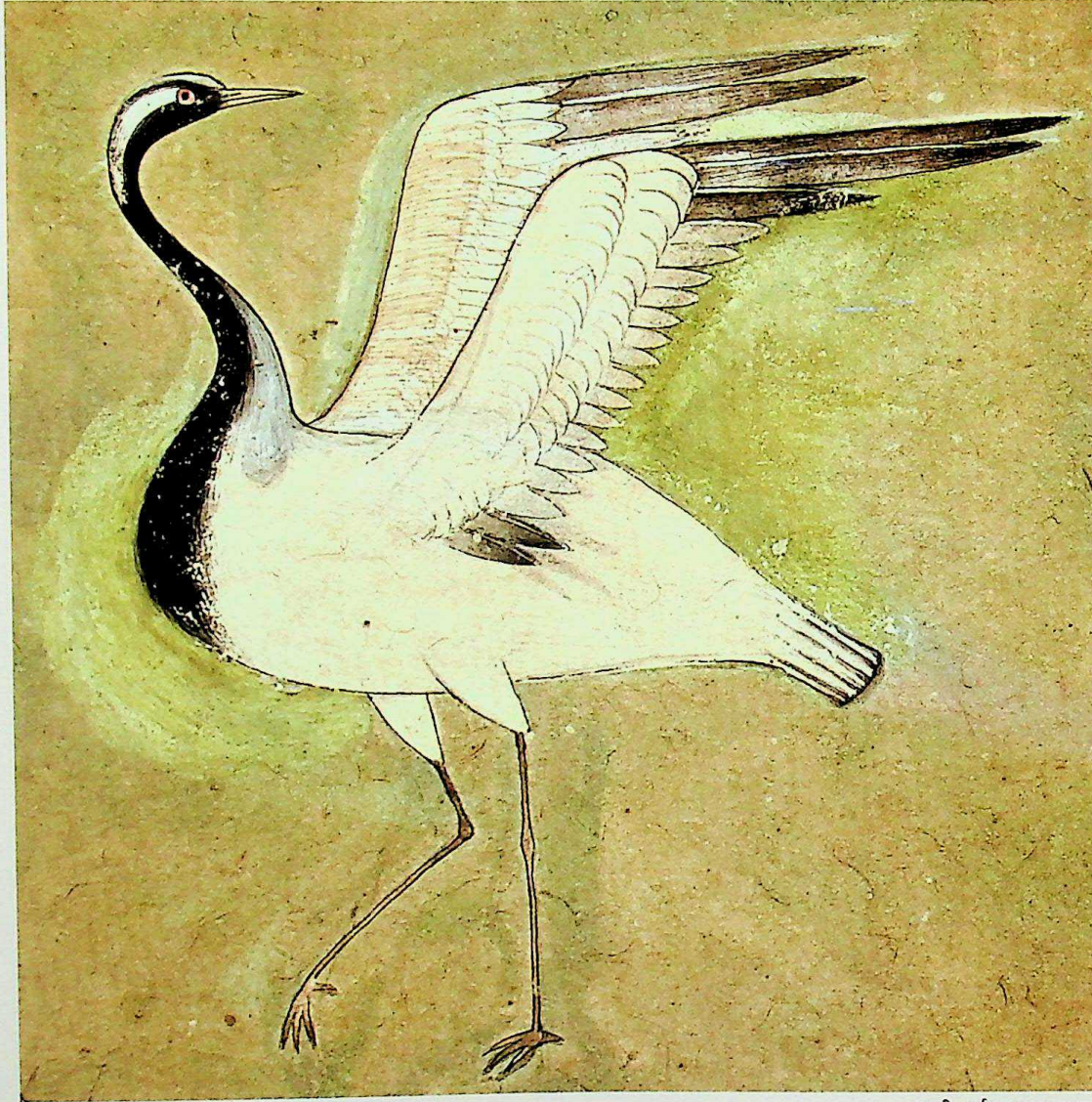
काली गर्दन वाला बगुला

पं.सं. : 40.245

शैली : कम्पनी शैली

विषय : दो पक्षी

माप : 22x19 से.मी.

मुख्य रूप से जावा में पायी जाने वाली गौरैया (Java Sparrow) की प्रजाति का जोड़ा एक पेड़ की डाल पर बैठा दिखाया गया है। यह पक्षी भारतीय उपमहाद्वीप में पायी जाने वाली गौरैया के तरह होता है।

जावा गौरैया
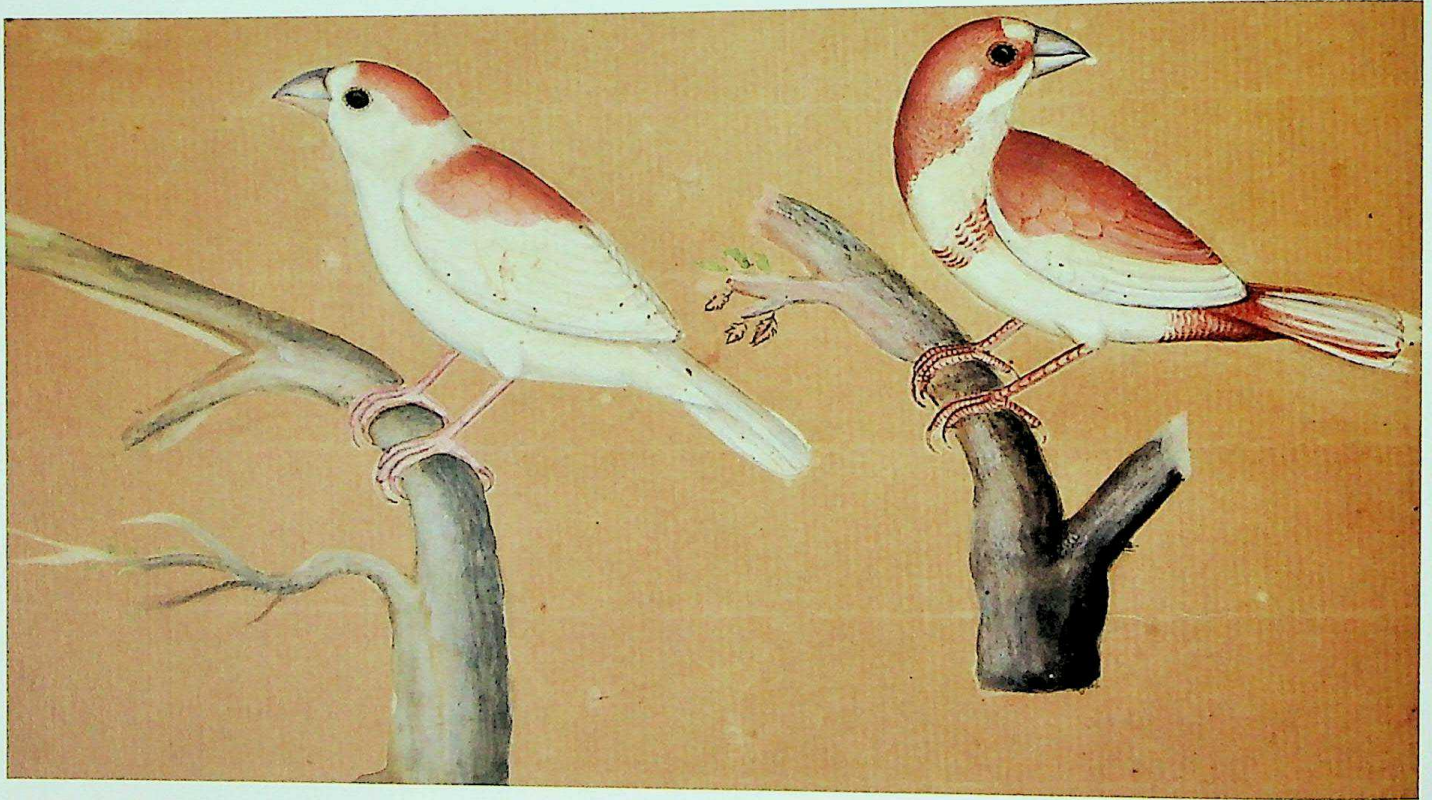
पं.सं. : 40.246

शैली : कम्पनी शैली

विषय : दो पक्षी

माप : 22x18.5 से.मी.

पेड़ की शाखा पर मुनिया पक्षी (Scaly Breasted Munia) का एक जोड़ा बैठे हुए चित्रित किया गया है, इनके पंखों के रंग से ऐसा प्रतीत होता है कि यह अभी छोटे बच्चे हैं, पक्षी के सामने भाग पर लाल रंग का धब्बा दिखाया गया है।
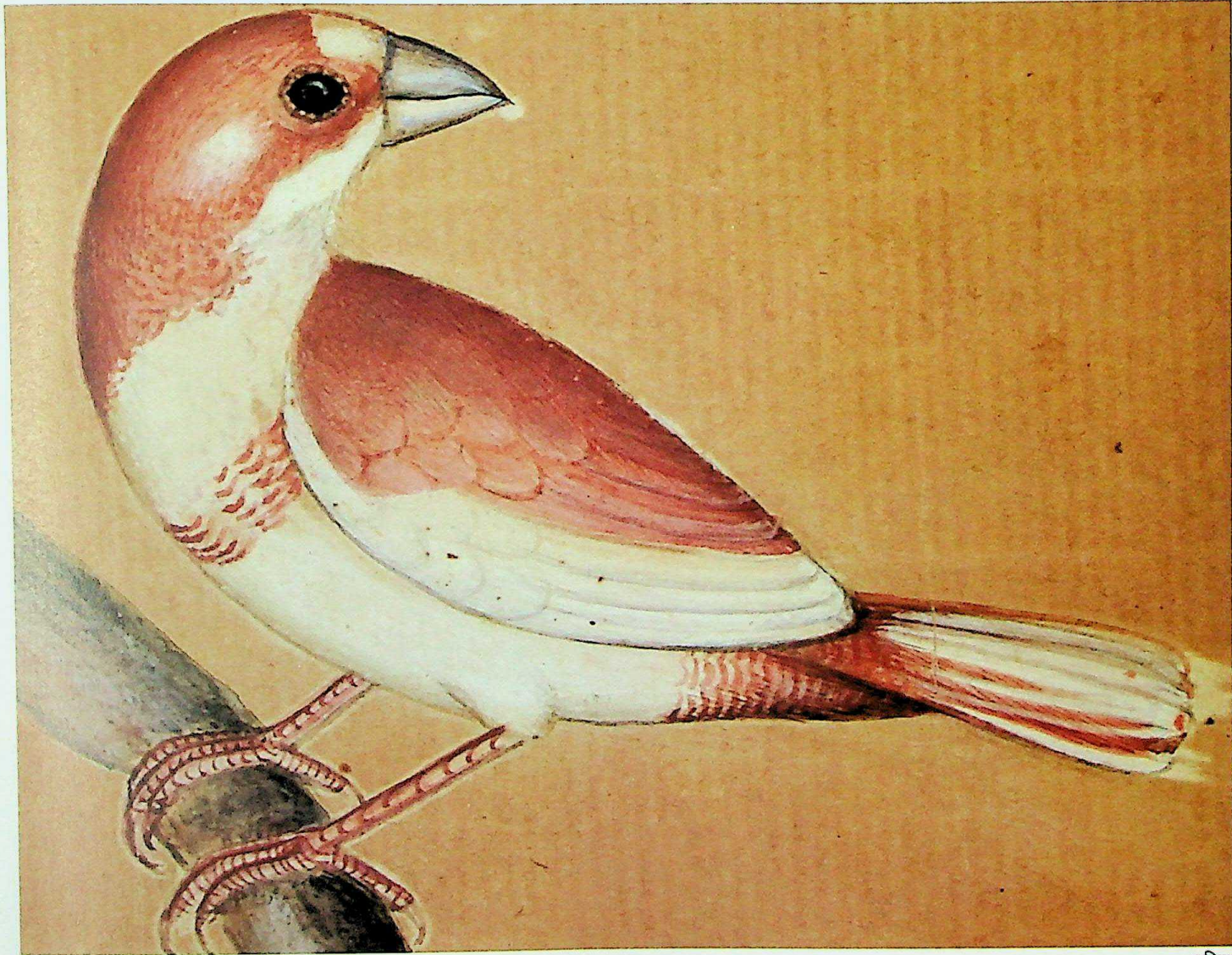
मुनिया
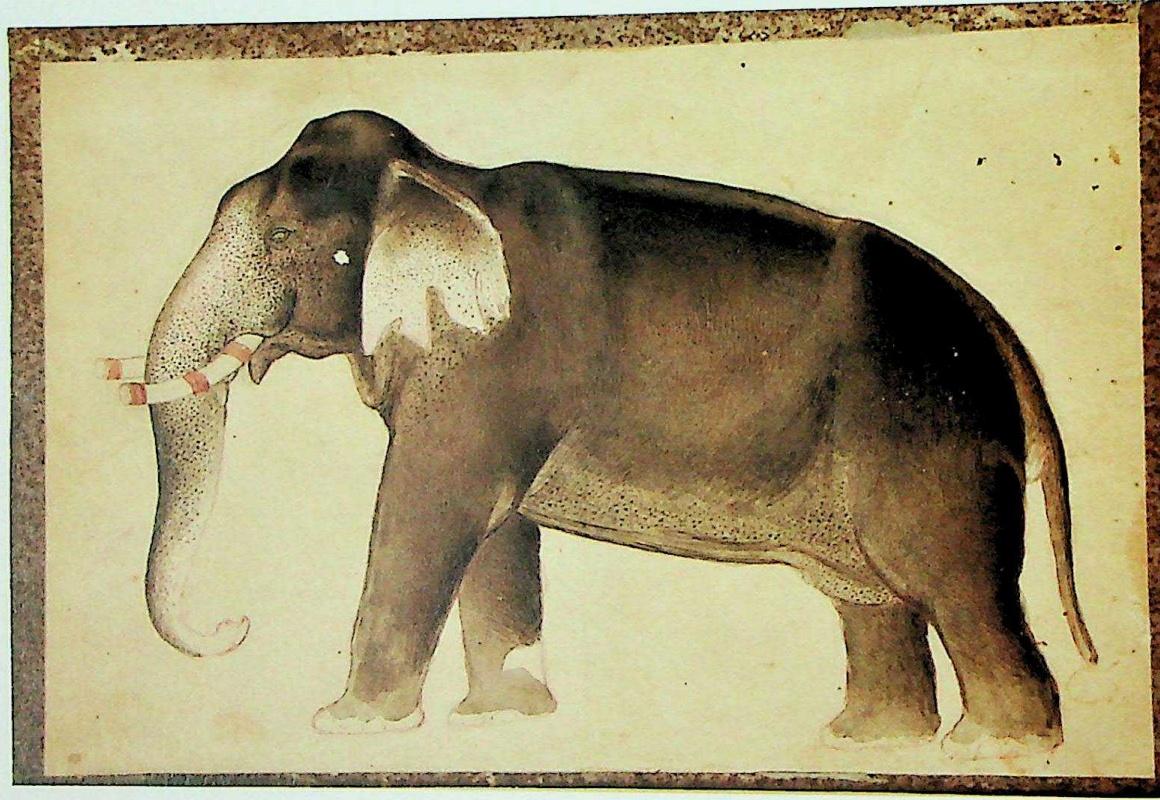
पं.सं. : 40.257

शैली : कम्पनी शैली

विषय : हाथी

माप : 27x20.5 से.मी.

हाथी (Asian Elephant) का यह चित्र निःसन्देह एक अनुपम कृति है, जिसे देखने से हाथी के एक-एक अंग की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार के चित्रों को मुख्य रूप से वैज्ञानिक शोध में किसी जीव की शारीरिक बनावट (Anatomical Study) के अध्ययन में प्रयोग किया जाता है।

हाथी
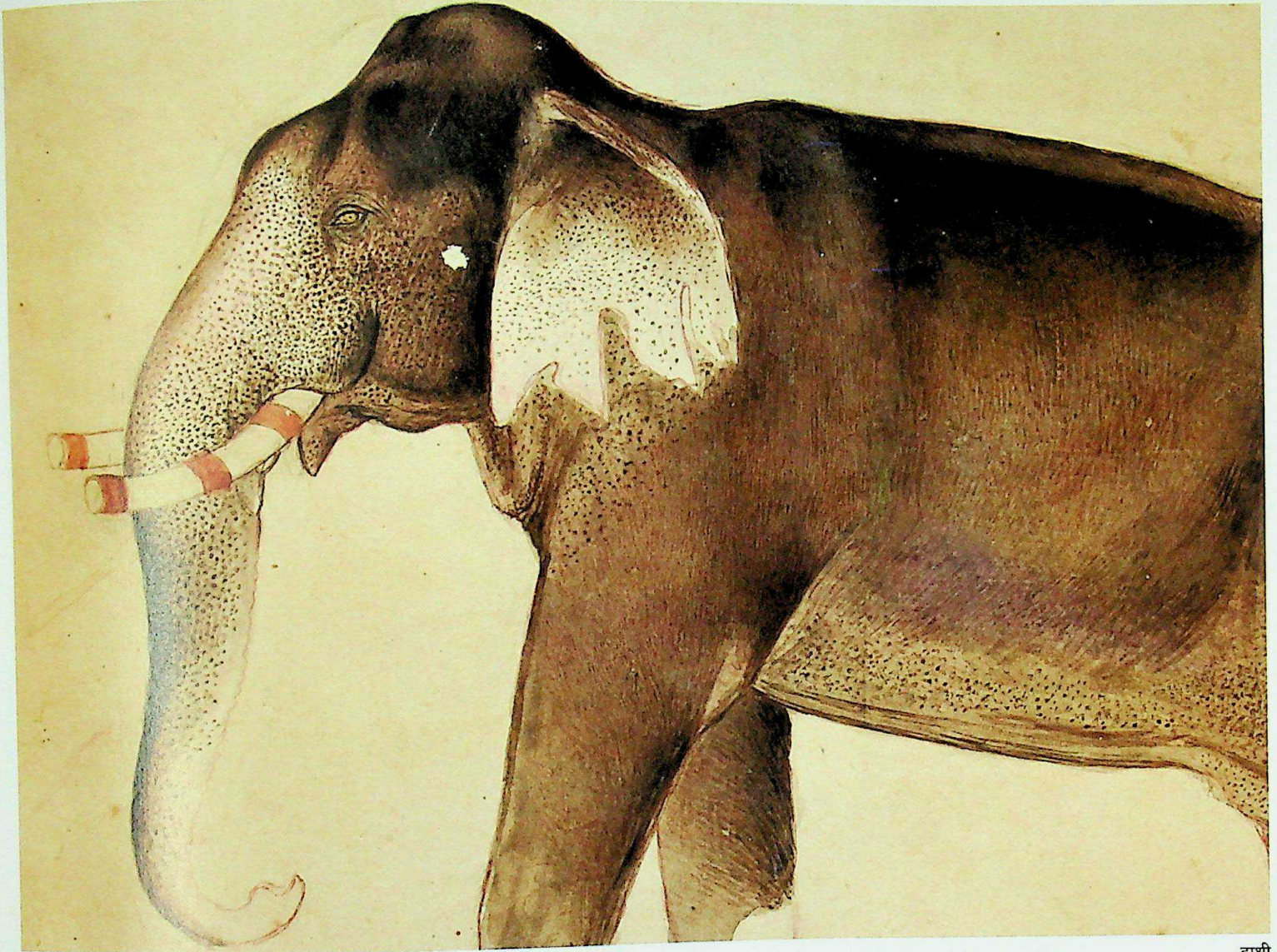
पं.सं. : 40.258

शैली : कम्पनी शैली

विषय : बत्तख

माप : 22x19 से.मी.

अतिसुन्दर बत्तख (Red Crested Pochard) का यह चित्र कम्पनी शैली के चित्रों में उत्कृष्ट श्रेणी का है। इसमें पक्षी के प्रत्येक पंख को उसके प्राकृतिक रंगों से मिलाते हुए चित्रित किया गया है। मुख्य चित्र को प्रमुखता से उभारने के लिए पृष्ठभूमि में हल्के मध्यम रंगों का प्रयोग किया गया है, जो कम्पनी शैली की मुख्य विशेषता है।
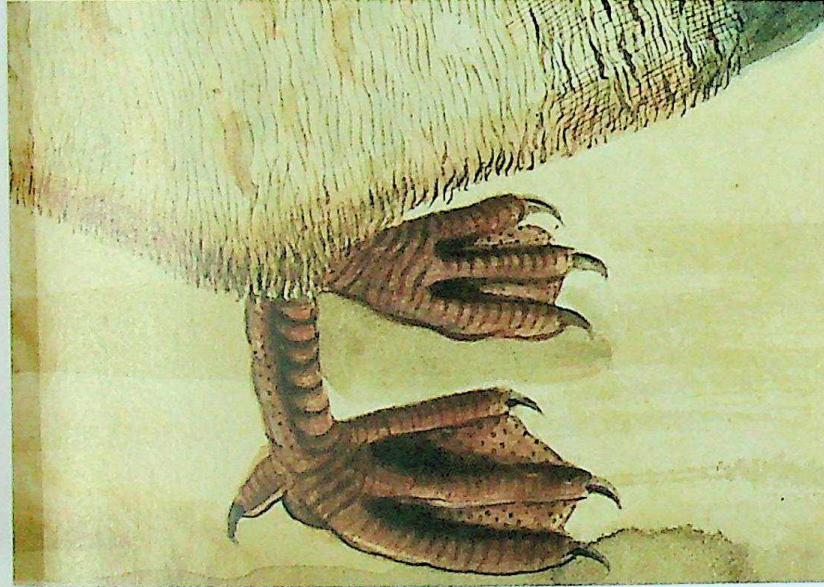
वत्तख

पं.सं. : 42.51

शैली : बूंदी शैली

विषय : नायिका भेद

माप : 29.5x18 से.मी.

नायिका भेद के इस लघुचित्र में राधा-कृष्ण की दो अलग-अलग मुद्राओं का चित्रण किया गया है, जिसमें एक दृश्य में राधा-कृष्ण से बैठकर बात कर रही है एवं दूसरे दृश्य में राधा- कृष्ण खड़े हैं। परिदृश्य में कमल के फूलों से पुष्पित जलाशय है, जिसके किनारे पर हिरन के झुण्ड का चित्रण है। केले के पेड़ों के मध्य कई एक पक्षियों जैसे हरा कबूतर (Green Pegion), बगुला (Egrett), बार्बेट (Barbett) आदि को चित्रित किया गया है। बगीचे में बने जलाशय में बत्तखों के झुण्ड के साथ राज्य पक्षी सारस (Sarus crane) के जोड़े को चित्रित किया गया है। यह पक्षी उत्तर प्रदेश राज्य पक्षी के रूप में चिन्हित है।
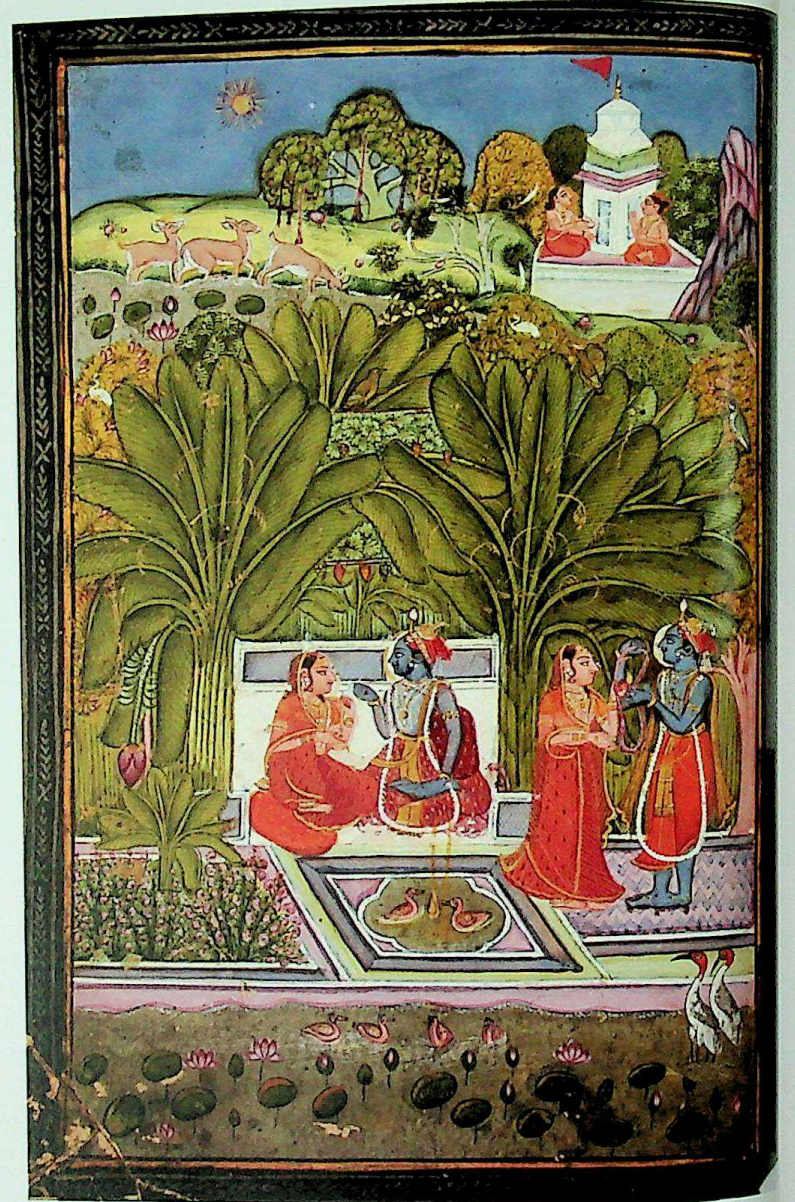
सफेद बगुला एवं बार्बेट

बत्तख

सारस बगुला

हिरन

पं.सं. : 43.33

शैली : कम्पनी शैली

विषय : शाहा बुलबुल

माप : 27x32.5 से.मी.

इस चित्र में बुलबुल की एक प्रजाति जिसे शाहा बुलबुल/दूधराज/सुल्ताना बुलबुल (Indian Paradise Flycatcher) के नाम से जाना जाता है, को चित्रित किया गया है। यह पक्षी मध्य प्रदेश के राज्य पक्षी के रूप में चिन्हित है।

शाहा बुलबुल

पं.सं. : 43.47

शैली : जयपुर शैली

विषय : आर्टिस्ट मेमोरी चार्ट

माप : 60.5x23.5 से.मी.

चित्रकार द्वारा एक संदर्भित तालिका (Reference Chart) बनाई जाती थी, जिसमें विभिन्न पशु-पक्षियों के चित्रों का संग्रह रहता था। इस प्रकार के लघुचित्रों को आर्टिस्ट मेमोरी चार्ट की संज्ञा दी गई है।

2

3
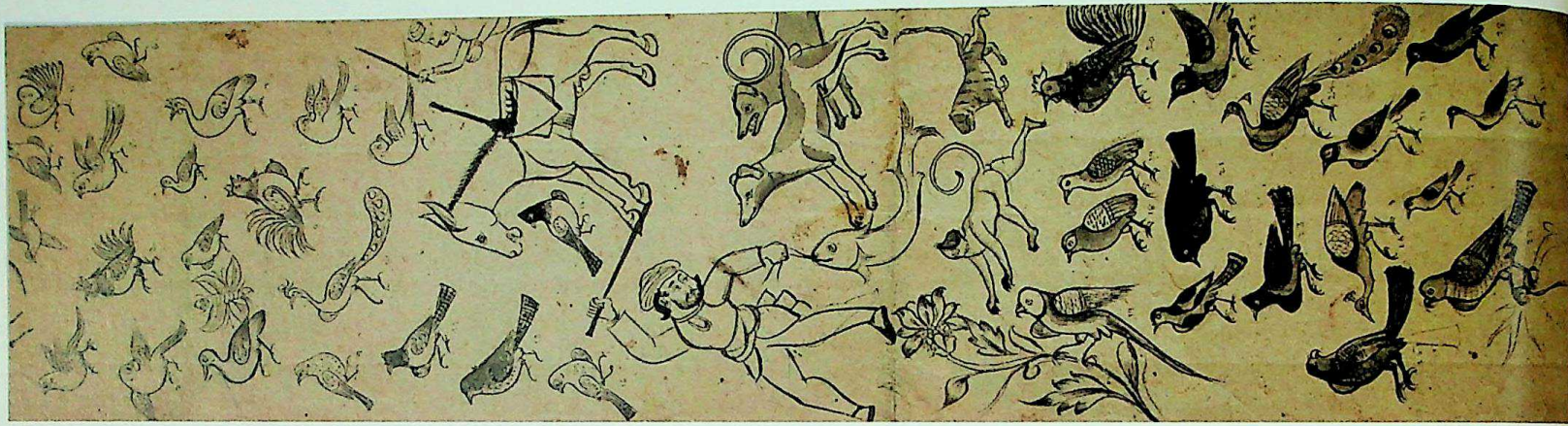
पं.सं. : 43.48

शैली : जयपुर शैली

विषय : ऑर्टिस्ट मेमोरी चार्ट

माप : 44.5x12 से.मी.

चित्रकार द्वारा एक संदर्भित तालिका (Reference Chart) बनाई जाती थी, जिसमें विभिन्न पशु-पक्षियों के चित्रों का संग्रह रहता था। इस प्रकार के लघुचित्रों को अर्टिस्ट मेमोरी चार्ट की संज्ञा दी गई है।

1

2

20
21
23
26
25
29
28
27
4
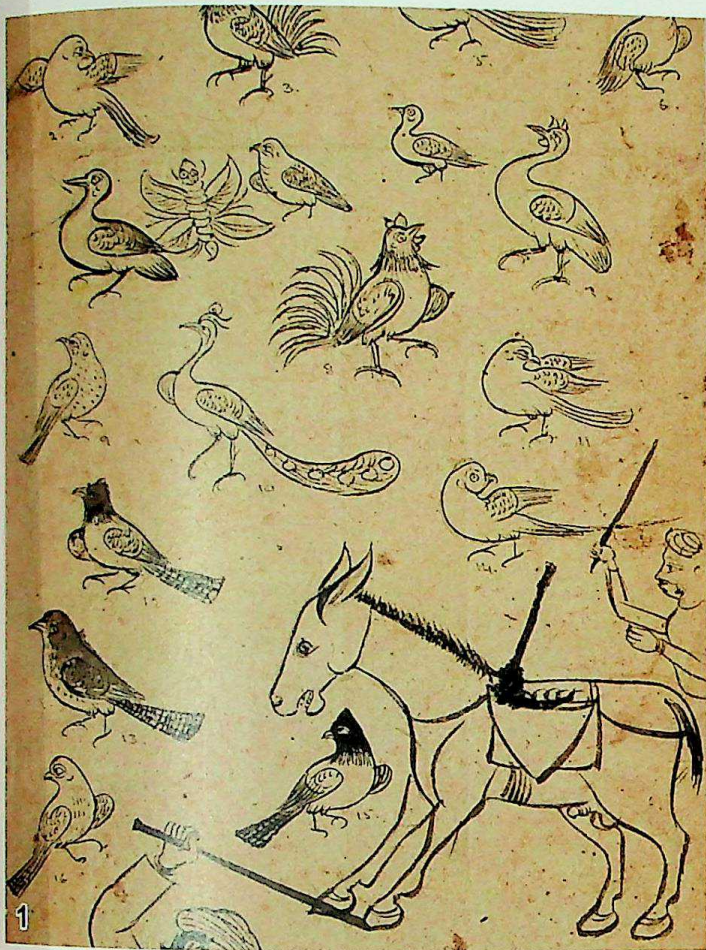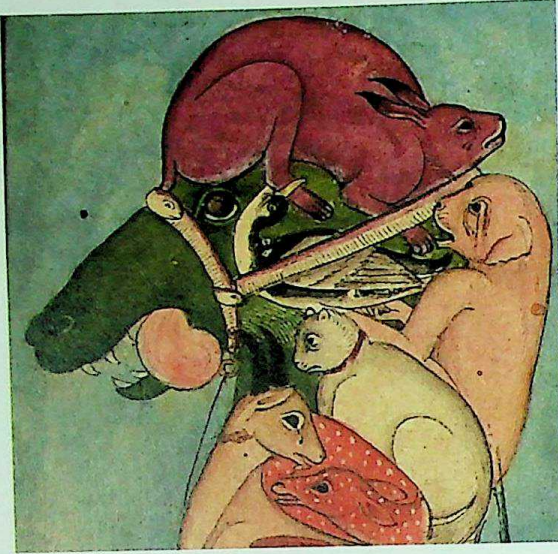
पं.सं. : 43.72

शैली : जयपुर

विषय : ऊँट पर बैठी परी

माप : 53.5x38 से.मी.

अत्यन्त सुन्दर इस लघुचित्र में काल्पनिक पशु (A Mythological Animal) पर सवार एक परी को चित्रित किया गया है। पशु को विविध जानवरों से मिलाकर बनाया गया है, जिसमें हाथी (Asian Elephant), जंगली सूअर (Wild Boar), नीलगाय (Blue Bull), तेंदुआ (Leopard), खरगोश (Hare), बाघ (Tiger), काला हिरन (Black Buck), बब्बर शेर (Asiatic Lion), चीतल (Spotted Deer), सिवेट (Civet), सांप (Snake) मछली आदि अन्य जानवरों को चित्रित किया गया है।
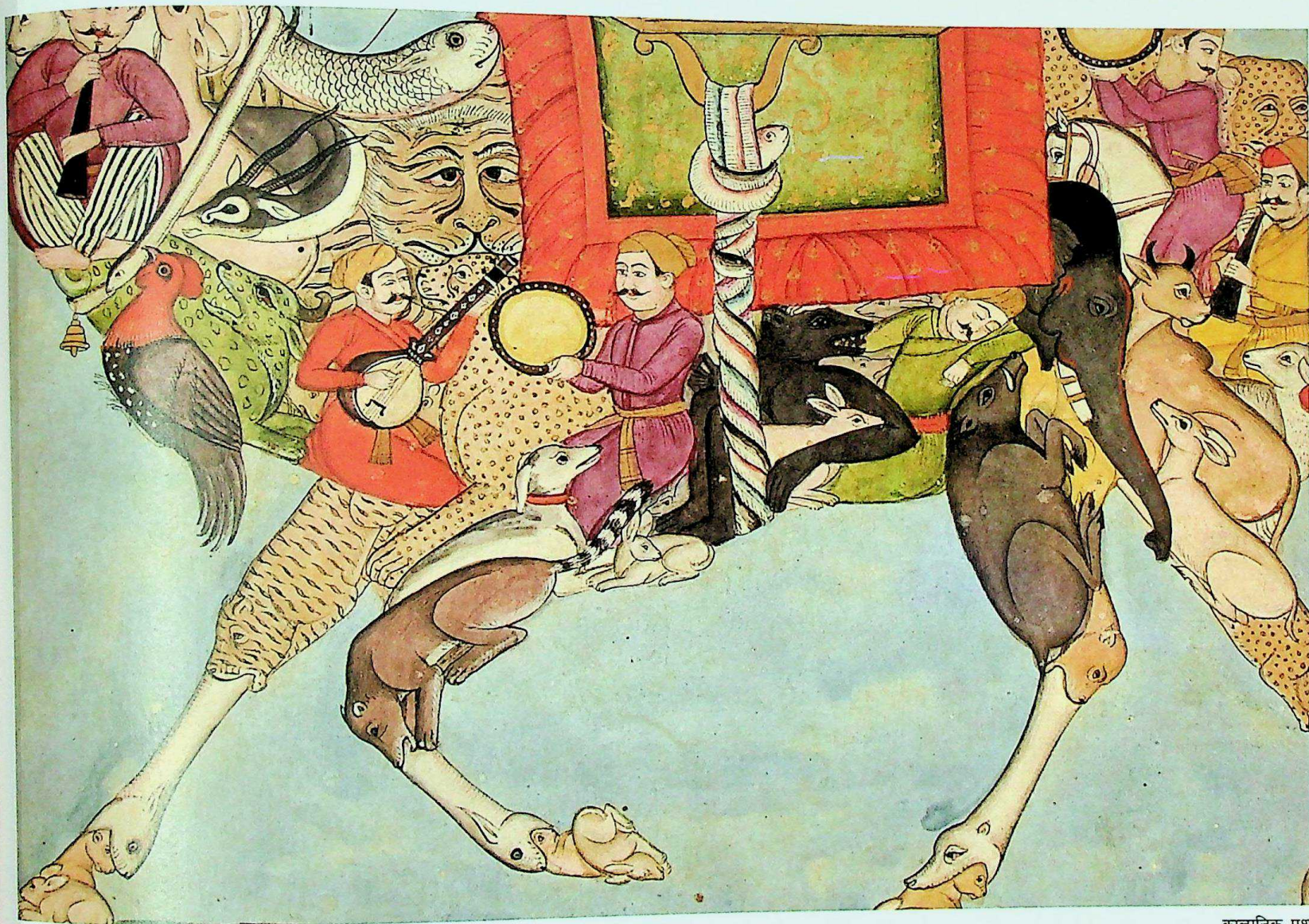
कात्पनिक पशु

पं.सं. : 49.46/13

शैली : दिल्ली शैली

विषय : रागमाला लघुचित्र का पृष्ठ भाग

माप : 26x18 से.मी.

चित्र की पृष्ठभूमि को हल्के रंग से बनाया गया है, ताकि मुख्य चित्र उभर सके। यहाँ दो पक्षियों सम्भवतः ओरिओल को बैगनी फूलों के पेड़ के नीचे बैठे दिखाया गया है, जबकि पतंगे (Dragon Fly) ऊपर की ओर उड़ रहे हैं।
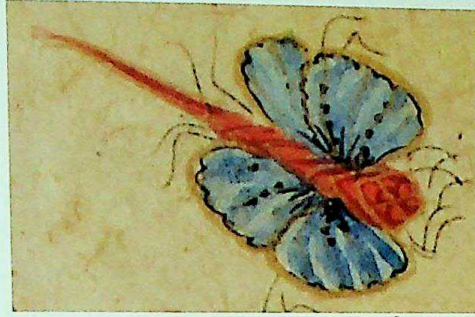
ड्रैगन फ्लाई

ओरिओल

ओरिओल

पं.सं. : 49.46/16

शैली : दिल्ली शैली

विषय : रागमाला लघुचित्र का पृष्ठ भाग

माप : 27x19 से.मी.

रागमाला श्रृंखला के इस लुघचित्र के पृष्ठभाग पर बने चित्र में रंग-बिरंगे फूलों के मध्य ऊपर की ओर काल्पनिक पक्षी को उड़ते हुए चित्रित किया गया है।

काल्पनिक पक्षी

पं.सं. : 49.46.4

शैली : दिल्ली शैली

विषय : रागमाला लघुचित्र का पृष्ठ भाग

माप : 27x18.5 से.मी.

दिल्ली शैली के इस लघुचित्र में अत्यन्त ही विचित्र पौधा, जिसमें फूलों के मध्य मनुष्य एवं पशु मुण्ड चित्रित है तथा पौधे के चारों ओर तितलियों एवं कीट (Moth) को मंडराते हुए दर्शाया गया है। रंगों का संयोजन उत्कृष्ट है।

काल्पनिक पुष्प

पं.सं. : 49.46/23

शैली : दिल्ली शैली

विषय : रागमाला लघुचित्र का पृष्ठ भाग

माप : 27x19 से.मी.

दिल्ली शैली के इस लघुचित्र में रागमाला पेन्टिंग (रागिनी असावरी) के पृष्ठ भाग पर अतिसुन्दर फूलों के मध्य एक हरे तोते (Rose Ringed Parakeet) का अंकन किया गया है। दिल्ली शैली की विशेषता युक्त इस लघुचित्र में हल्के रंग की पृष्ठ भूमि में सुन्दर चित्र अंकित हैं। चित्र के ऊपर के हिस्से में 'रागनी जोगी आसारी' अंकित है।

तोता

पं.सं. : 49.46/28

शैली : दिल्ली शैली

विषय : रागमाला लघुचित्र का पृष्ठ भाग

माप : 27x19 से.मी.

चित्र में जलाशय का दृश्य दिखाया गया है, जिसमें मछलियाँ, बत्तख एवं कदाचित आइबिस (Scarlet Ibis), को विचरण करते हुए चित्रित किया गया है। कमल पुष्प जलाशय की सुन्दरता बढ़ा रहे हैं। लघुचित्र में बांयी ओर कोने में गोल्डेन ओरिओल चित्रित है।

बत्तख
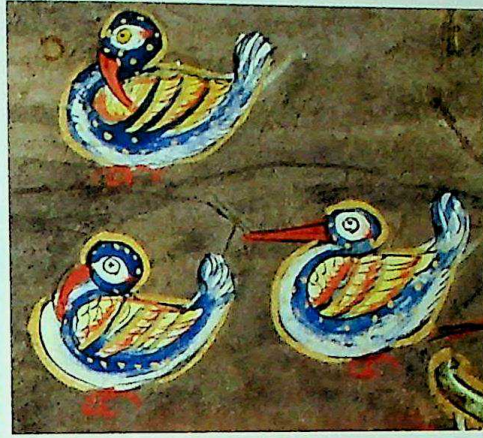
स्कार्लेट आइबिस

गोल्डेन ओरियोल

मछली

काल्पनिक पशु

स्कार्लेट आइबिस

पं.सं. : 49.46/11

शैली : दिल्ली शैली

विषय : रागिनी बंगाल, रागमाला

माप : 26x18 से.मी.

रागिनी बंगाल को दर्शाते इस लघुचित्र में सिंह चर्म पर बैठी नायिका के बगल में बब्बर शेर (Asiatic Lion) को चित्रित किया गया है। दिल्ली शैली की विशेषताओं से युक्त सुन्दर बार्डर वाले लघुचित्र में सुन्दर पेड़-पौधे एवं भवन निर्मित हैं तथा फारसी में लेख भी अंकित है।
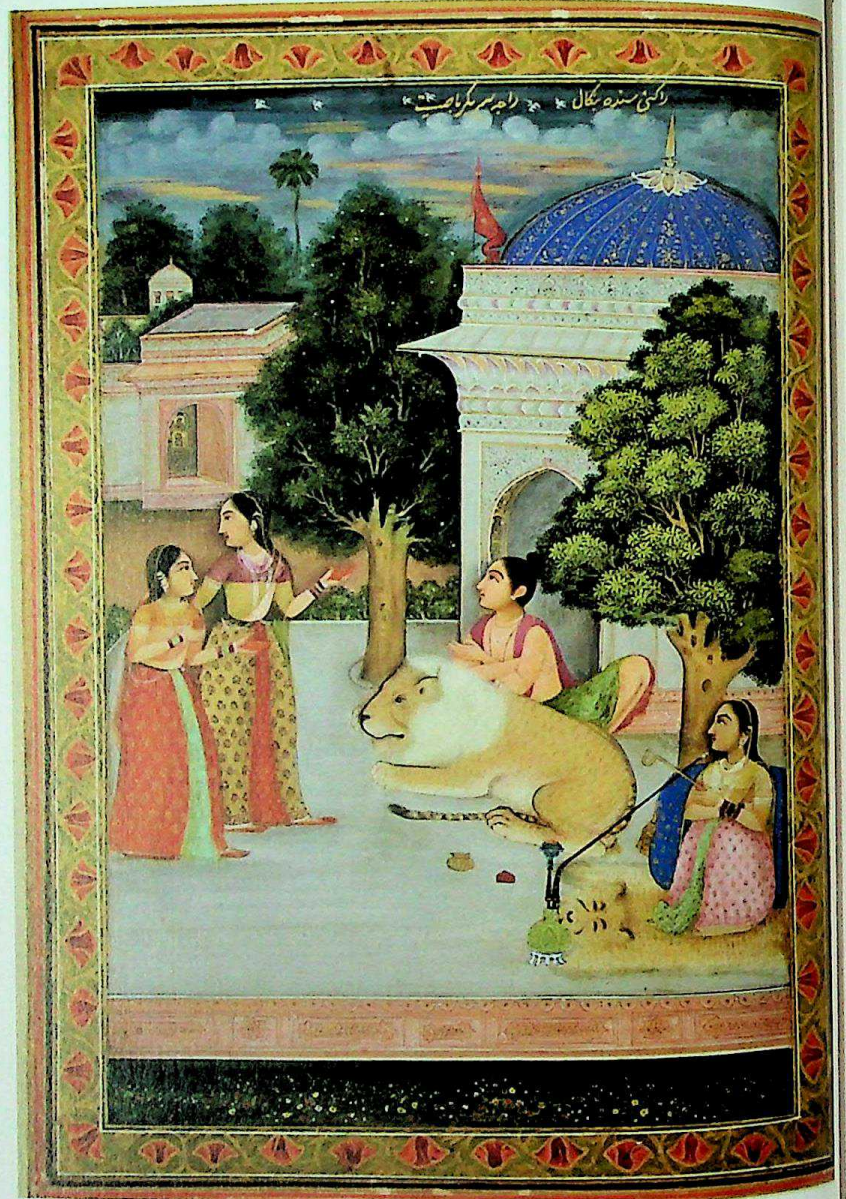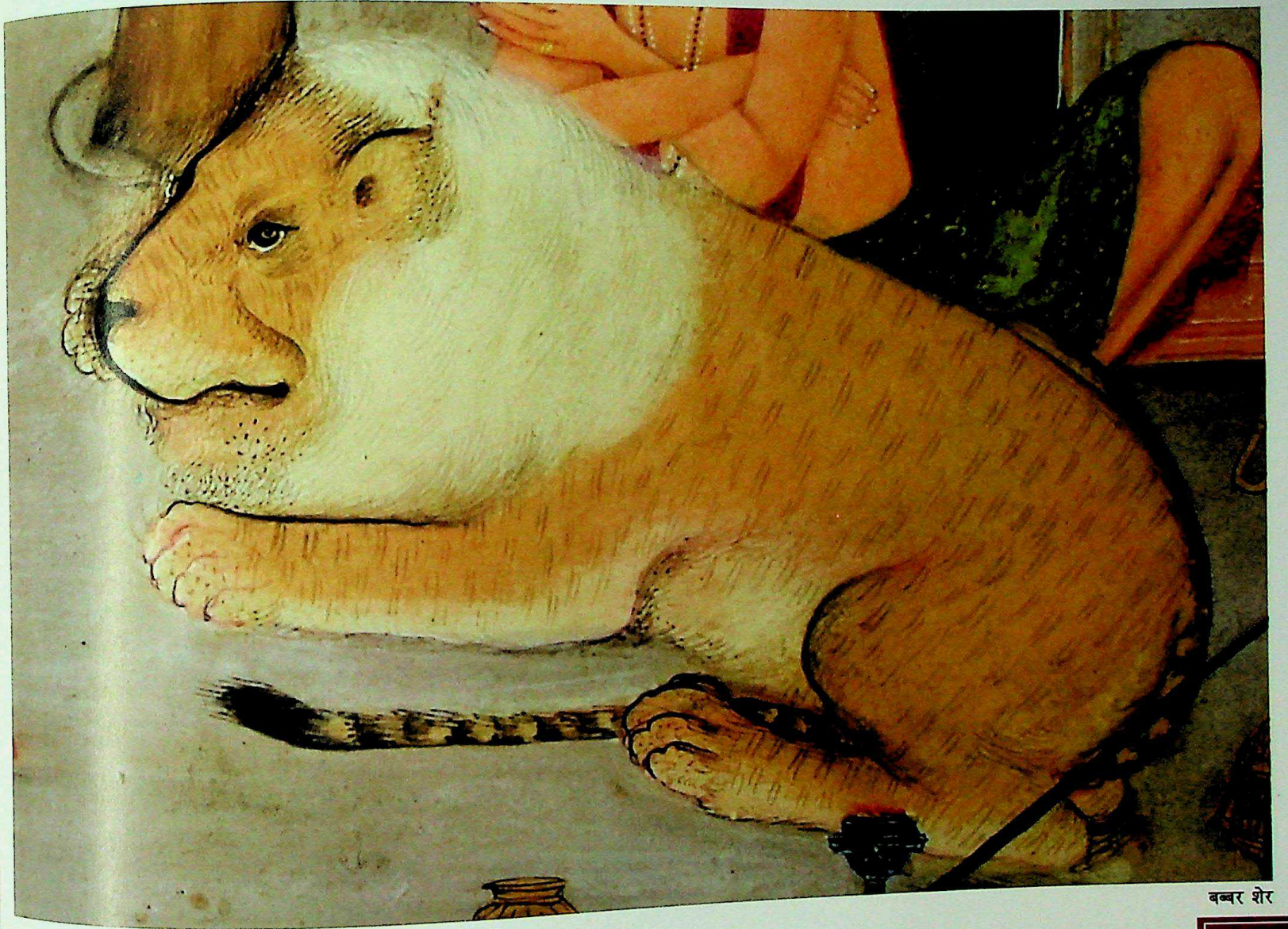
बब्बर शेर

पं.सं. : 49.46/12

शैली : दिल्ली शैली

विषय : रागिनी तोडी

माप : 26.5x18.5 से.मी.

घोड़े पर सवार राजा (नायक) पेड़ों के पीछे खड़ी नायिका को निहार रहा है। कमल पुष्प से भरे जलाशय के किनारे काले हिरन (Black Buck) से घिरी नायिका प्रेम में ओत-प्रोत वीणा बजा रही है। एक सखी झाड़ियों के पीछे से देख रही है। पहाड़ों के पीछे अत्यधिक दूर एक महल दृष्टव्य है।
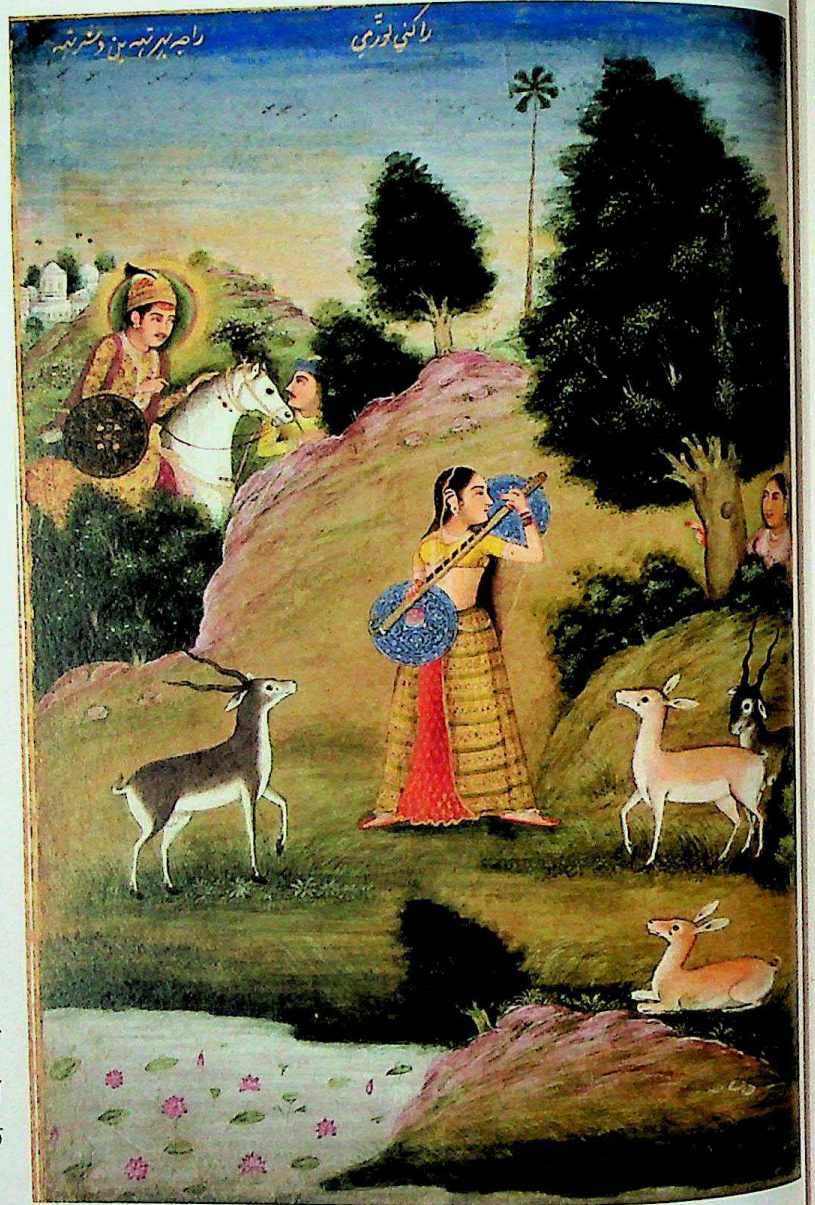
काला हिरन (नर)
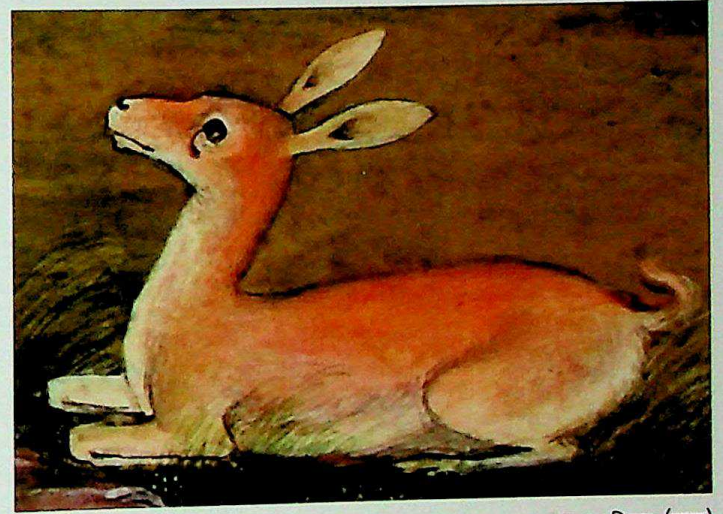
काला हिरन (मादा)

पं.सं. : 49.46/26

शैली : दिल्ली शैली

विषय : राग कन्हारा

माप : 27.5x19.5 से.मी.

राजा बीरबल को हाथी दांत हाथ में लिये हुए दिखाया गया है एवं उसके सिपाही राजा के शौर्य का बखान कर रहे हैं। एक सेवक हाथी को डराने के लिये हाथ में मशाल लिये खड़ा है। इस चित्र में हाथी (Asiatic Elephant) का अत्यन्त ही सजीव चित्रण है। चित्र के चारों ओर सुन्दर अलंकृत बार्डर है।
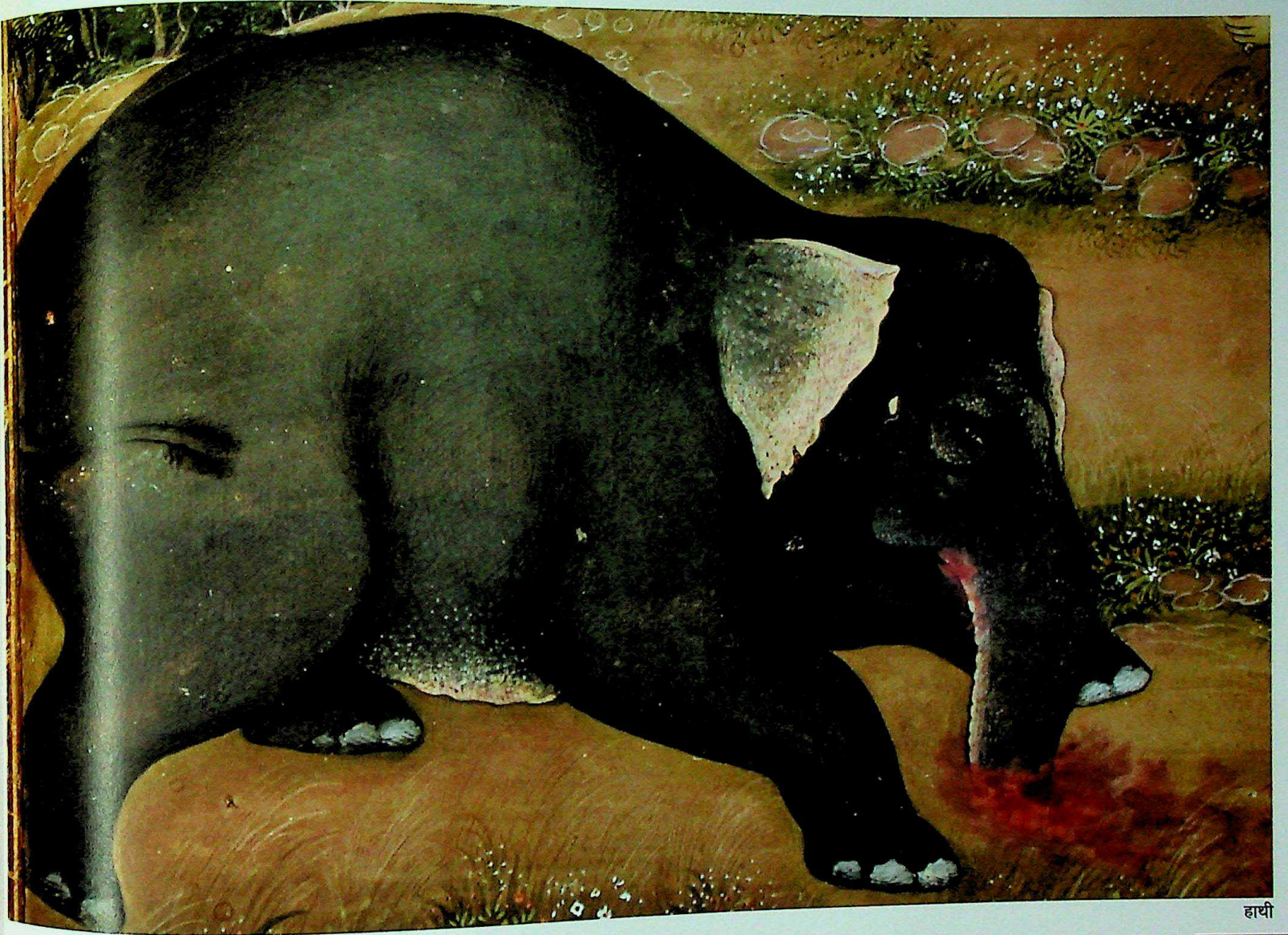
हाथी

पं.सं. : 49.125

शैली : मॉडर्न कापी मुगल

विषय : नल-दम्यन्ती विवाह

माप : 55x39.5 से.मी.

अतिसुन्दर मॉडर्न मुगल लघुचित्र, जिसमें पालकी में बैठी दमयन्ती राजा नल को वरमाला पहना रही है। इस चित्र का बार्डर मुगल शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है।

चित्रित बार्डर में अण्डाकार आकृतियों में विभिन्न पशु-पक्षियों के चित्र स्वर्ण से चित्रित हैं। इन चित्रों में बाघ द्वारा गाय का शिकार, बुलबुल का जोड़ा, उड़ते हुए तोते, बगुले का जोड़ा, हिरन, तितली, चिंघाड़ता हुआ हाथी, क्रेन, बत्तख आदि को बड़ी ही सजीवता के साथ चित्रित किया गया है।
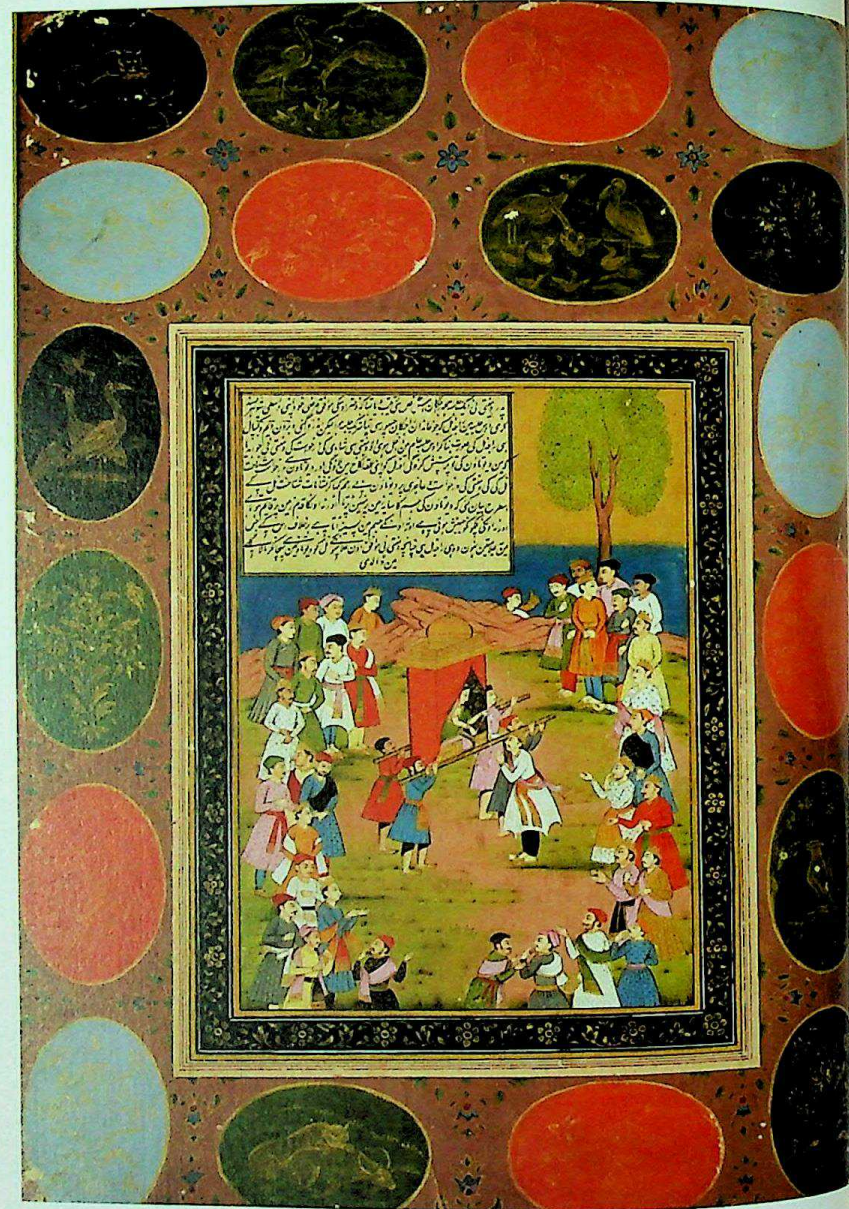
बाघ द्वारा जंगली भैंस का शिकार

तोता

युगल शाहा बुलबुल

बगुला एवं हेरॉन

चिड़िया

सारस क्रेन व बत्तख

तितली व पक्षी

पं.सं. : 49.125

शैली : मॉडर्न लघुचित्र

विषय : ऊँट एवं घुड़सवार

माप : 55x40 से.मी.

लघुचित्र में चार पुरूषों को राजसी वेष-भूषा में घोड़े (Horse) एवं ऊँट (Camel) पर सवार दिखाया गया है।
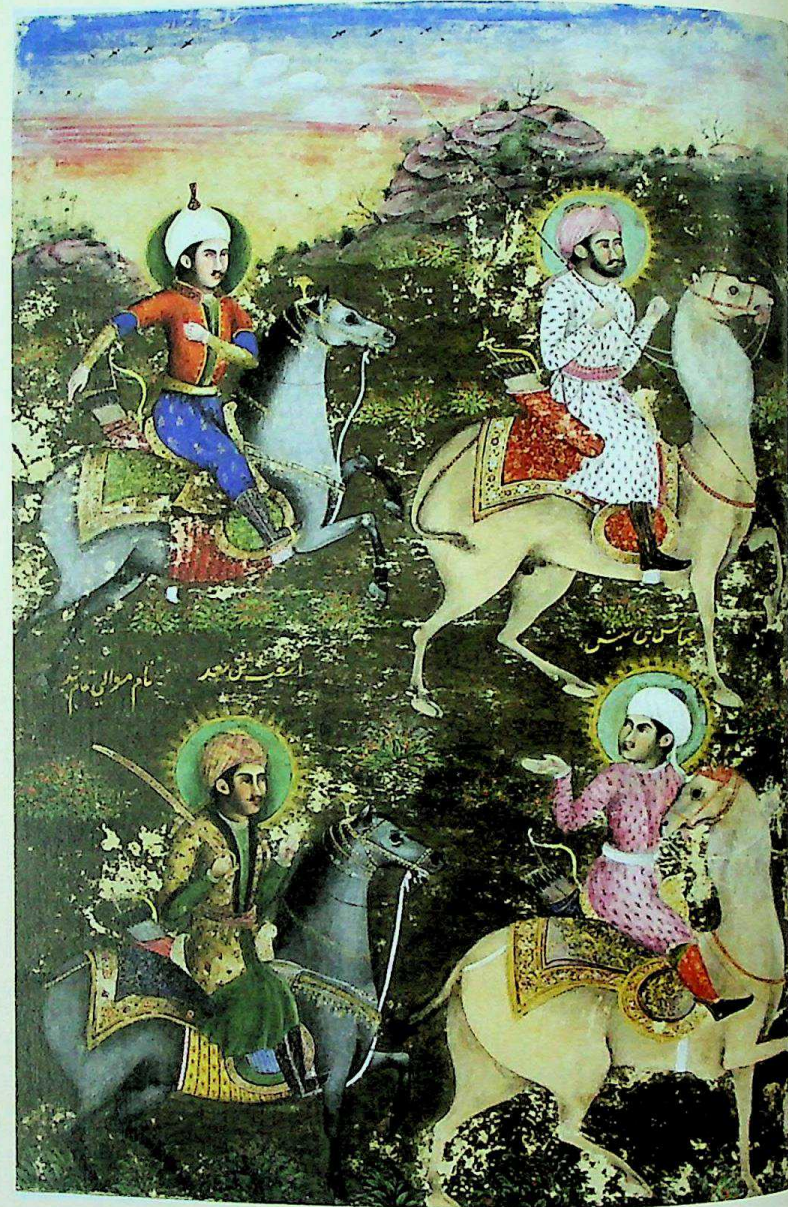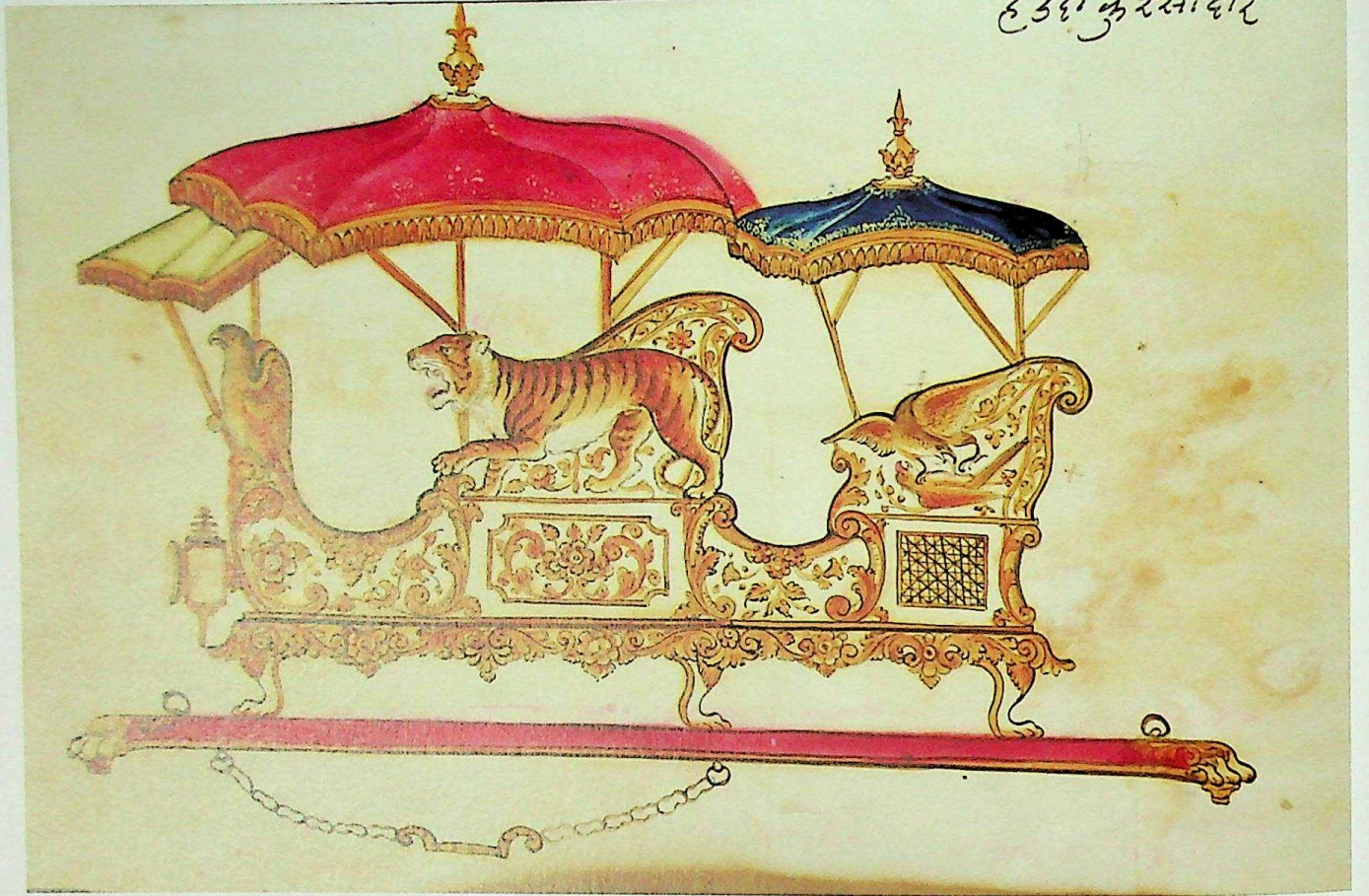
पं.सं. : 76.136/2

शैली : लाइन ड्रांइग

अत्यन्त सुन्दर हौदे में बाघ (Bengal Tiger) एवं बाज़ (Hawk) का अति सुन्दर चित्रण है।

बाज़

बाघ
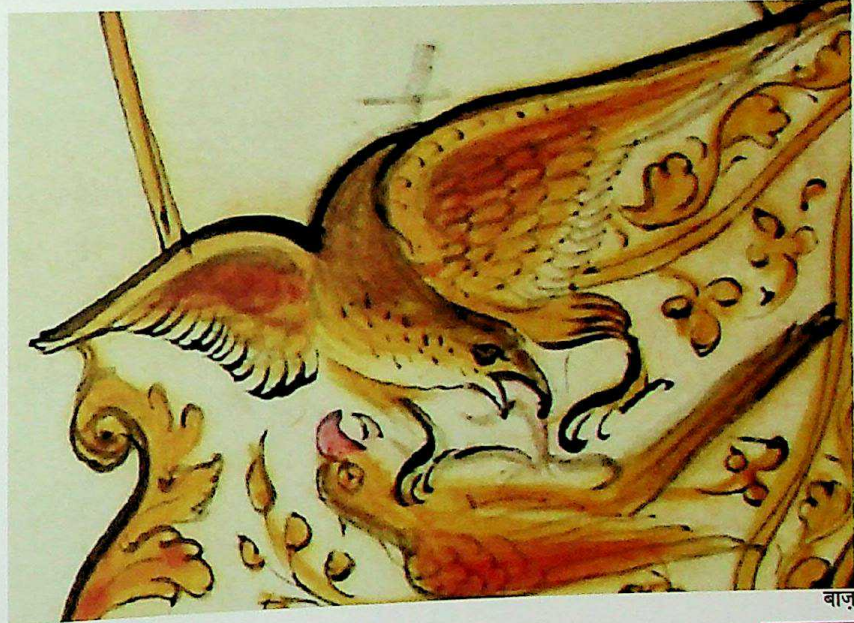
बाज़

पं.सं. : 56.33

शैली : मेवाड़

विषय : राजा अरि सिंह द्वारा नीलगाय का शिकार

माप : 40.5x28.5 से.मी.

राजा अरि सिंह को अपने सिपाही और कुत्तों के साथ नील गाय (Blue Bull) का शिकार करते हुये दिखाया गया है। पहाड़ी के पीछे दूर कहीं एक महल भी चित्रित है। लघुचित्र में पहाड़ों के मध्य सुन्दर वनस्पतियों का चित्रण है। घोड़े और नील गाय की शारीरिक बनावट सुस्पष्ट एवं सटीक है।
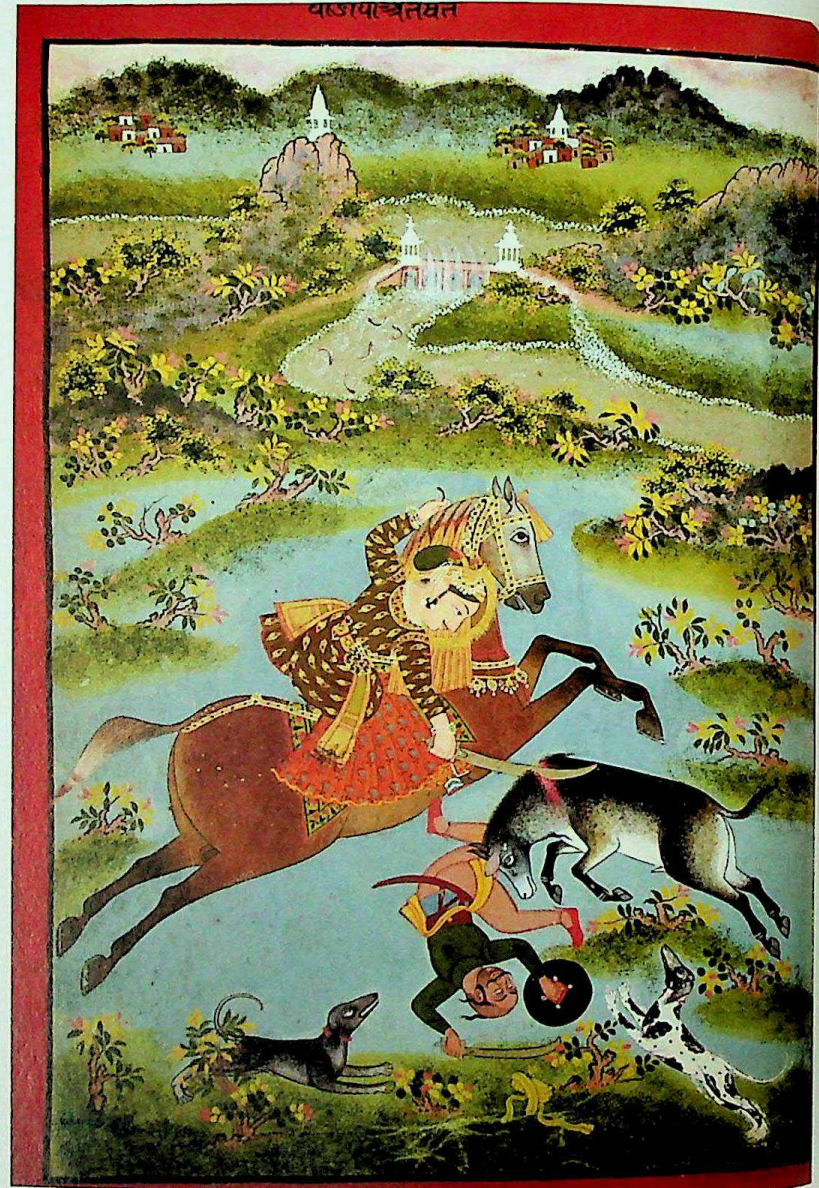
नील गाय

पं.सं. : 57.124

विषय : बाघ द्वारा जंगली सुअर पर आक्रमण

माप : 53x47 से.मी.

पहाड़ों के बीच एक राजमहल के किसी प्रांगण का चित्रण है, जिसमें राजा अपनी रानियों एवं सेविकाओं के साथ बैठा तथा नीचे प्रांगण में बाघ (Bengal Tiger) और जंगली सूअर (Wild Boar) एक दूसरे पर आक्रमण कर रहे हैं। उसी के मध्य में कुछ पुरूष भी हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि उन्हें प्रताड़ित करने के उद्देश्य से बाड़े के अन्दर डाला गया है। बाड़े के दोनों ओर ऊँची दीवारों पर राजदरबारी बैठकर दृश्य का आनन्द ले रहे हैं।
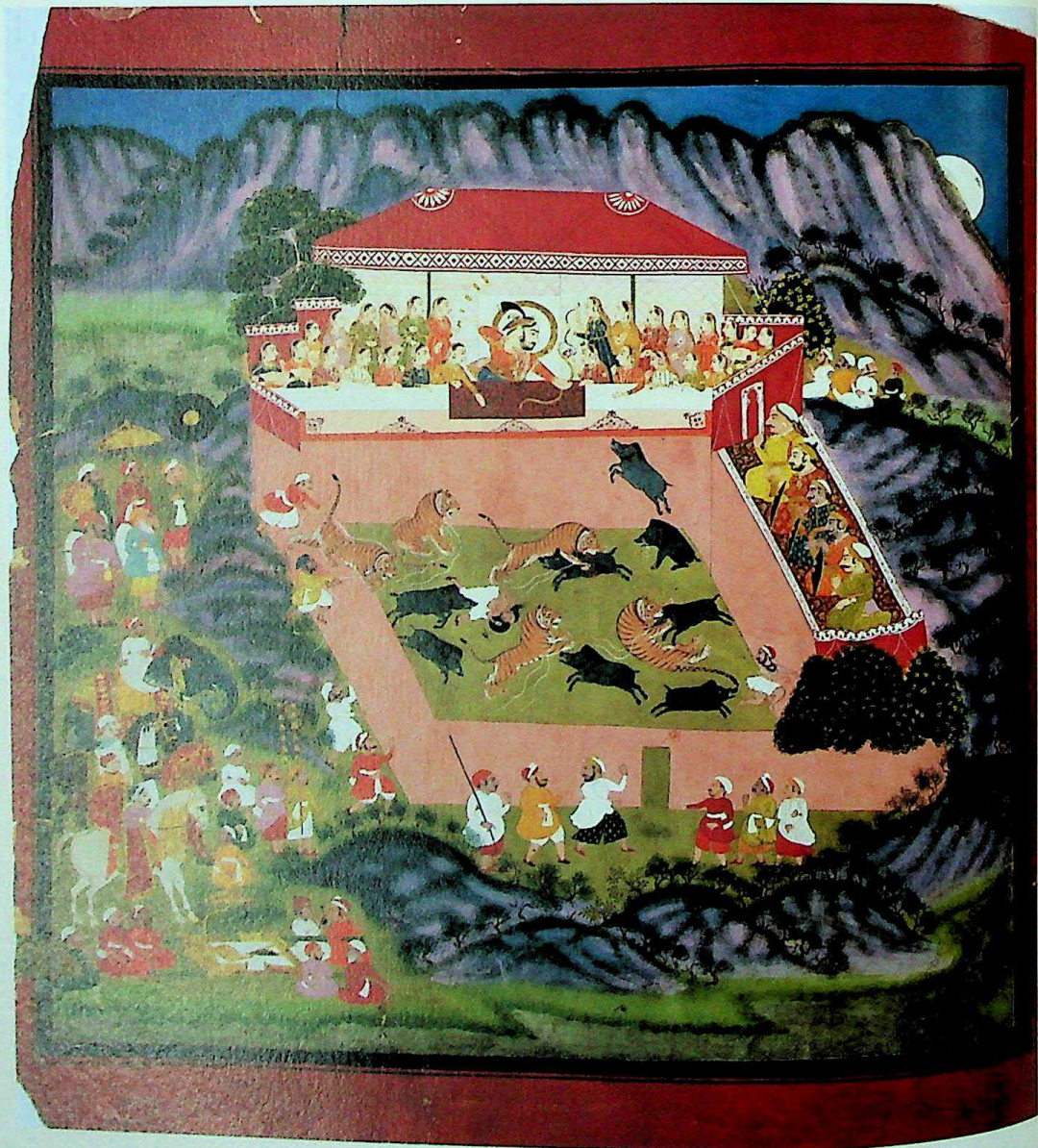
वि.सं. : 57.153

शैली : मारवाड़ शैली

विषय : बाज़

माप : 26x17.5 से.मी.

अत्यन्त सुन्दर नक्काशी युक्त स्वर्ण अड्डे पर बाज़ को बैठे दिखाया गया है। राजस्थान परिक्षेत्र में राजपूतों द्वारा शिकार में सहयोग हेतु बाज़ को साथ में रखा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह किसी राज परिवार के सदस्य का पालतू पक्षी है।
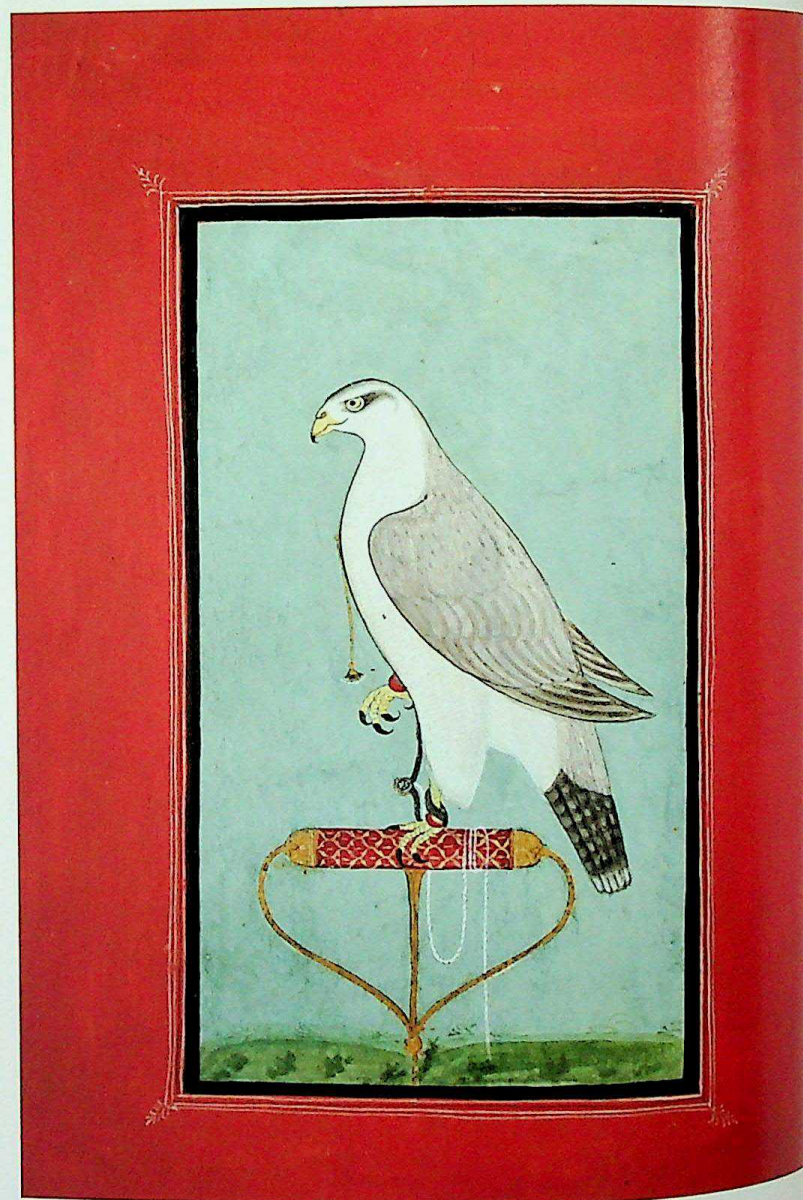
बाज़

काला हिरन

पं.सं. : 57.300/1

शैली : बूंदी शैली

विषय : चैतमास

माप : 32.5x22.5 से.मी.

बूंदी शैली के इस लघुचित्र में नायक-नायिका वार्तालाप कर रहे हैं। बगीचे में केले के सुन्दर फलदार पेड़ों के सामने जलाशय में सारस (Sarus Crane) पक्षी का जोड़ा विचरण कर रहा है। सारस को उत्तर प्रदेश के राज्य पक्षी के रूप में मान्यता प्राप्त है। राजमहल के पीछे दूर पहाड़ियों पर एक मन्दिर में पूजारत पुजारी को चित्रित किया गया हैं। मन्दिर के बगल में हिरणों एवं पक्षियों का जोड़ा विचरण कर रहा है।
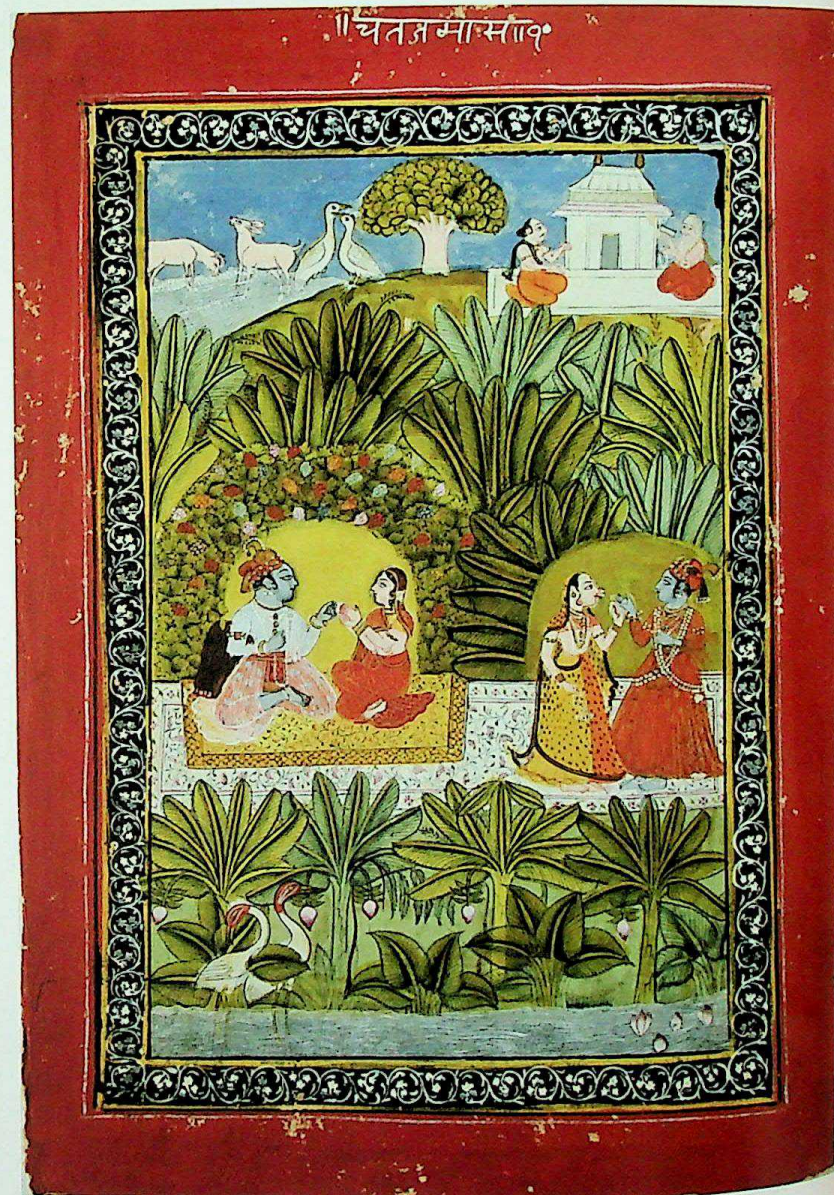
बगुला

सारस क्रेन

काला हिरन

पं.सं. : 57.300/1

शैली : बूंदी शैली

विषय : चैतमास

माप : 32.5x22.5 से.मी.

बूंदी शैली के इस लघुचित्र में नायक-नायिका वार्तालाप कर रहे हैं। बगीचे में केले के सुन्दर फलदार पेड़ों के सामने जलाशय में सारस (Sarus Crane) पक्षी का जोड़ा विचरण कर रहा है। सारस को उत्तर प्रदेश के राज्य पक्षी के रूप में मान्यता प्राप्त है। राजमहल के पीछे दूर पहाड़ियों पर एक मन्दिर में पूजारत पुजारी को चित्रित किया गया हैं। मन्दिर के बगल में हिरणों एवं पक्षियों का जोड़ा विचरण कर रहा है।

बगुला
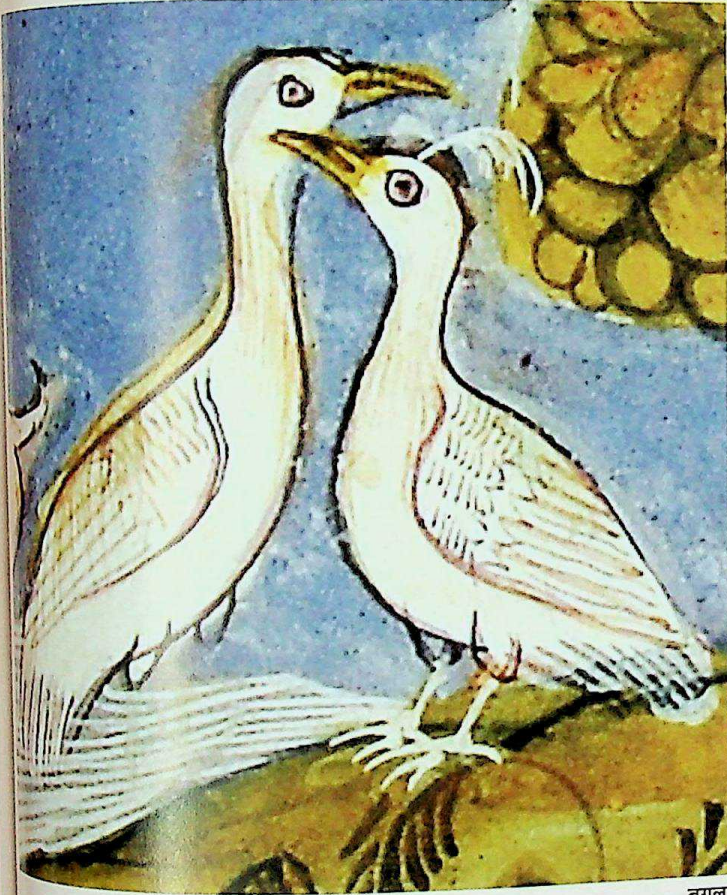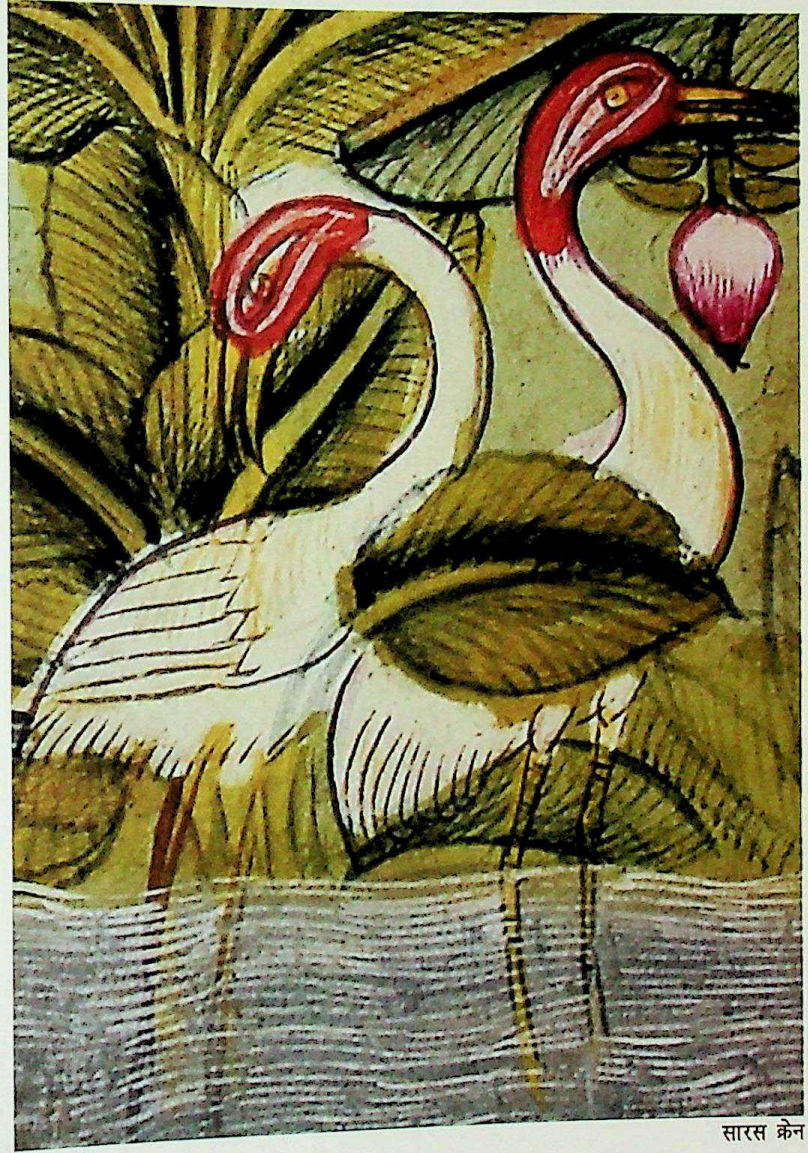
सारस क्रेन

पं.सं. : 57.300/2

शैली : बूंदी शैली

विषय : बैसाख

माप : 31.5x22 से.मी.

तीन दृश्यों से चित्रित इस लघुचित्र के प्रथम दृश्य में राजमहल के छज्जे (बाड़जा) पर नायक-नायिका वार्तालाप कर रहे हैं, दूसरे दृश्य में शिकारी द्वारा पहाड़ी मैना (Hill Myna), बगुला (Egrett) का शिकार एवं तीसरे दृश्य में वट सावित्री पूजा का दृश्य चित्रित किया गया है।
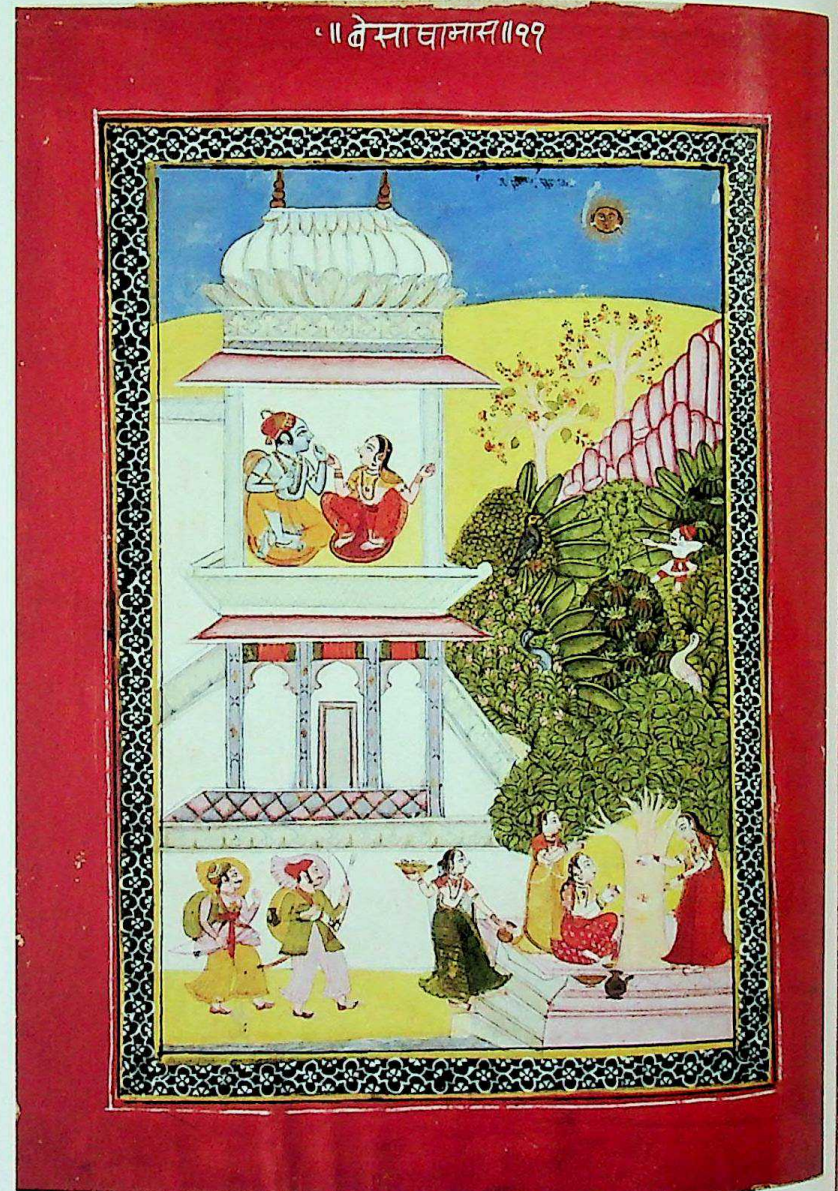
मैना एवं बगुला
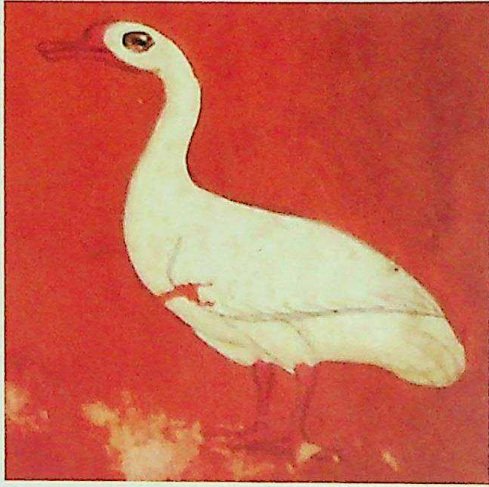
बत्तख

पं.सं. : 58.14/8

शैली : मेवाड़ शैली

विषय : रसिक प्रिया

माप : 21.5x17.5 से.मी.

चारों ओर सुन्दर बार्डर युक्त लघुचित्र में 3 अलग-अलग चित्रों को अंकित किया गया है। रसिक प्रिया पाण्डुलिपि के इस चित्रित पृष्ठ में ऊपर के दृश्य में संगीत का आनन्द लेते नायक, दूसरे दृश्य में किसी मंथन में लीन नायक व तीसरे दृश्य में अपनी सहेली से वार्तालाप करती नायिका चित्रित है। बत्तख (Domestic Goose) एवं मोर-मोरनी (Indian Peacock) के चित्र अत्यन्त सजीव हैं। पेड़ों के पीछे तोता तथा कोयल (Green Parrot Indian Coockoo) का सुन्दर अंकन है।

मोर

कोयल

तोता एवं एक अन्य पक्षी
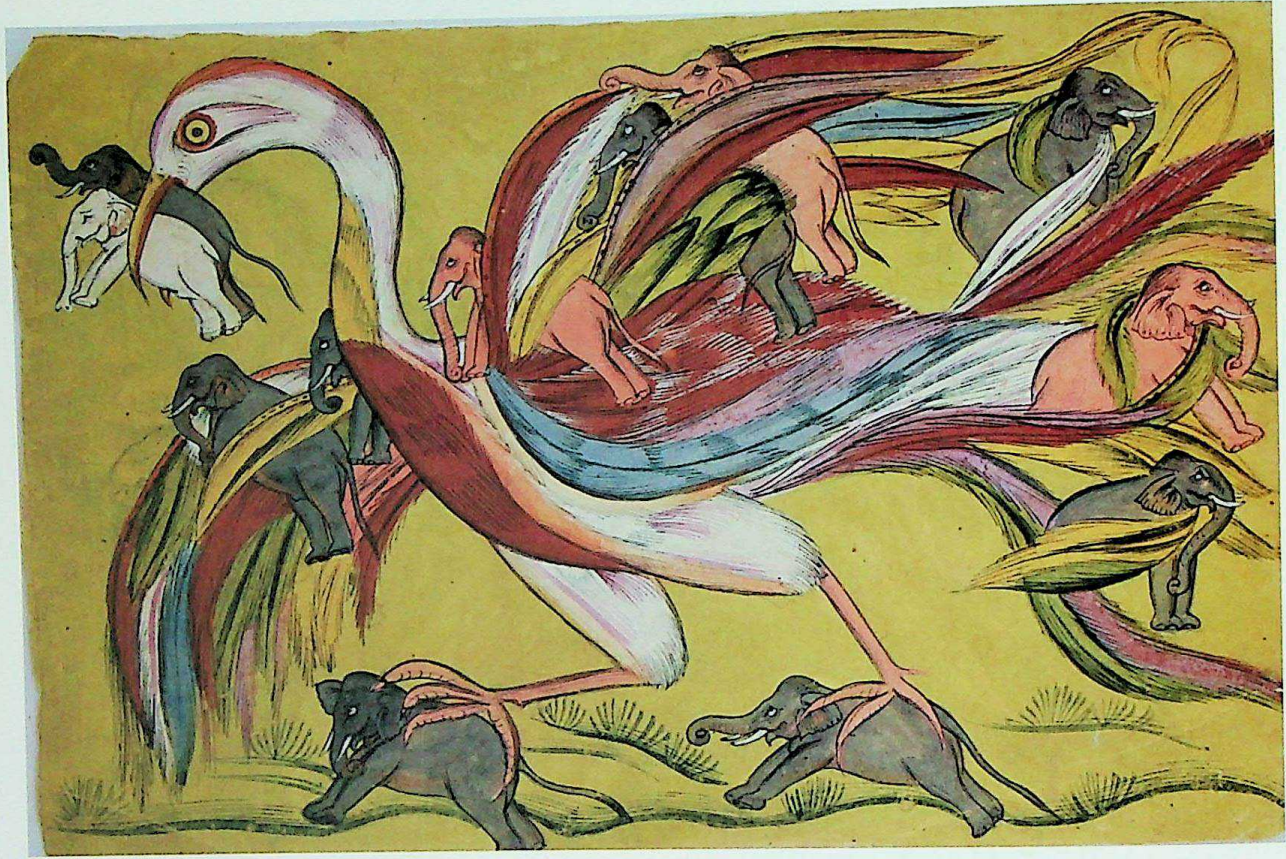
पं.सं. : 58.17

शैली : राजस्थानी शैली

विषयु : काल्पनिक पक्षी

माप : 23x16 से.मी.

एक विशाल काल्पनिक पक्षी को अपनी चोंच में हाथी को दबाये हुए यद्यपि हाथी अपने को बचाने के प्रयास में हैं, लेकिन पक्षी ने उसे पूरी तरह अपनी चोंच में दबोच रखा है।
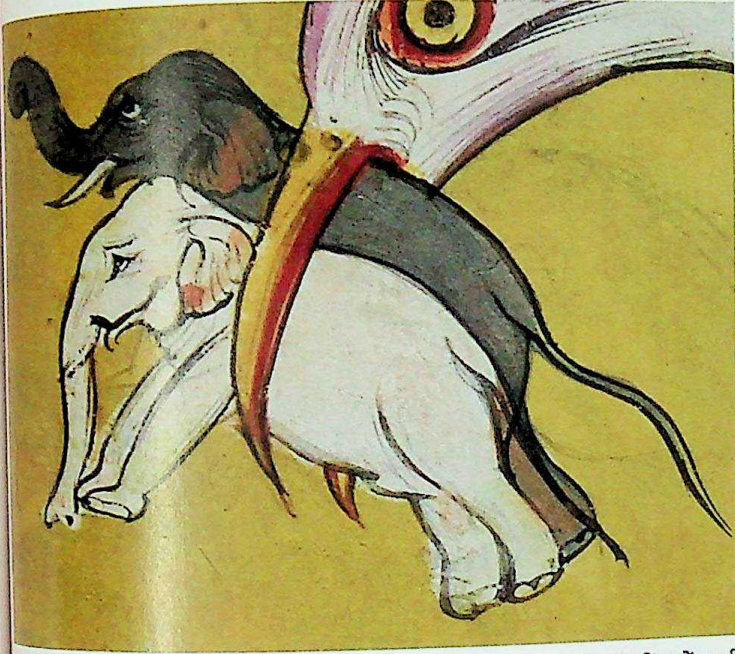
पक्षी की चोंच में हाथी
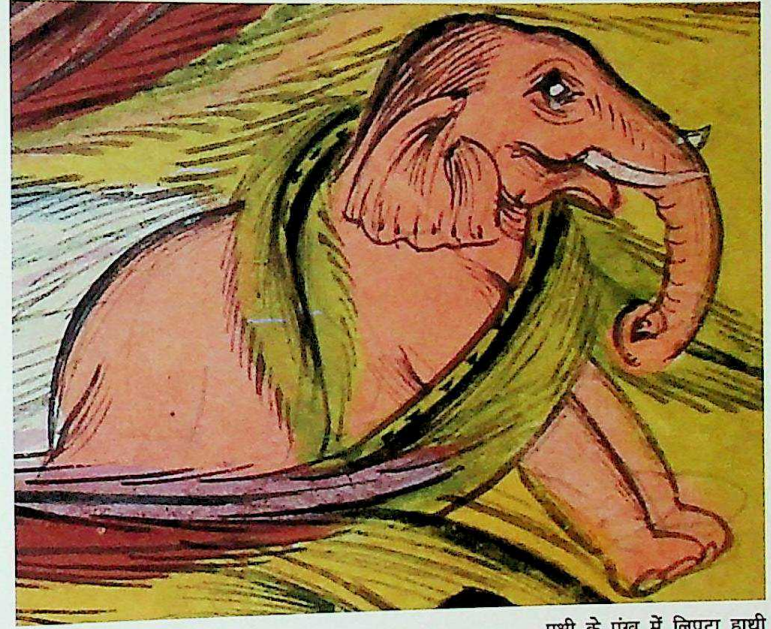
पक्षी के पंख में लिपटा हाथी

पक्षी के पंजे में हाथी

क्रेन
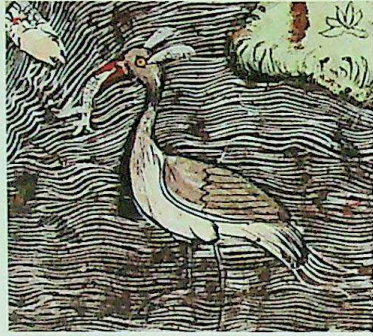
किंग फिशर
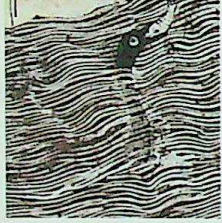
कॉर्मोरेंट
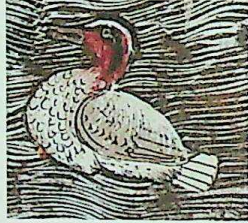
काल्पनिक पक्षी

मॉटल्ड डक

पं.सं. : 58.19

शैली : बूंदी शैली

विषय : छज्जे पर बैठे राधा कृष्ण

माप : 30x22.5 से.मी.

एक जलाशय के किनारे राधा-कृष्ण जलीय पशु-पक्षियों को निहार रहे हैं। जलाशय की दीवार के सामने एक नीलकंठ (Pied Kingfisher) खास अन्दाज में मछली पकड़ने का प्रयास कर रहा है। पानी में सारस (Sarus Crane), घड़ियाल (Crocodile), मॉटल्ड डक (Mottled Duck) क्रेन (Demoiselle Crane), कॉर्मोरेंट (Cormorant) एवं कुछ मछलियाँ विचरण कर रही हैं।
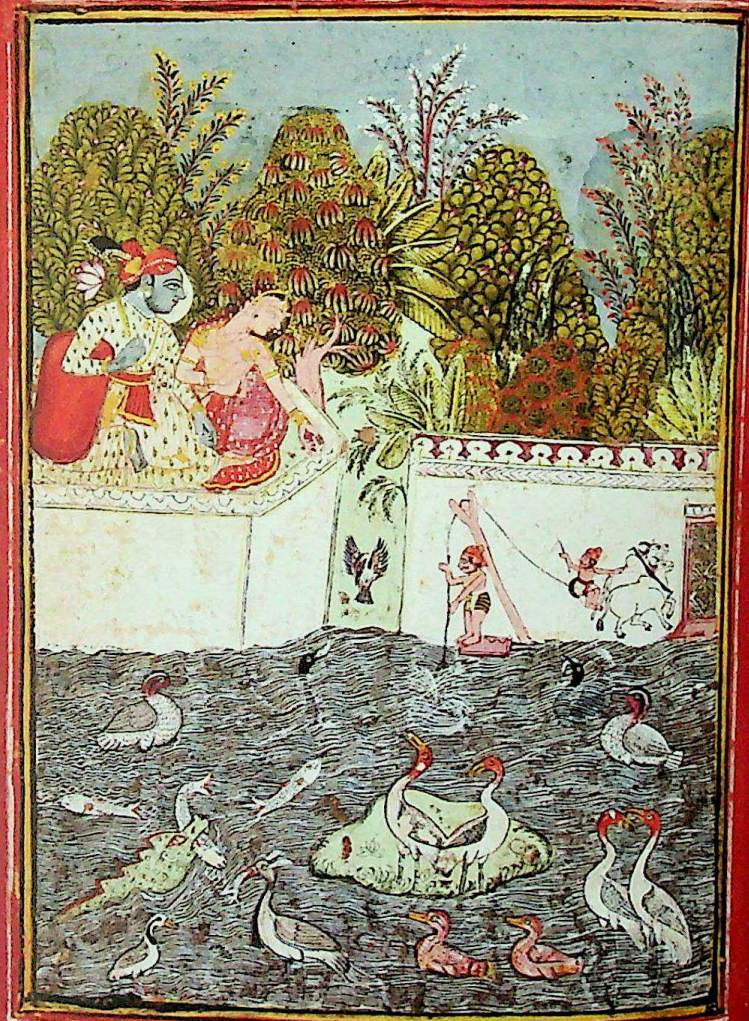
घड़ियाल, मछली
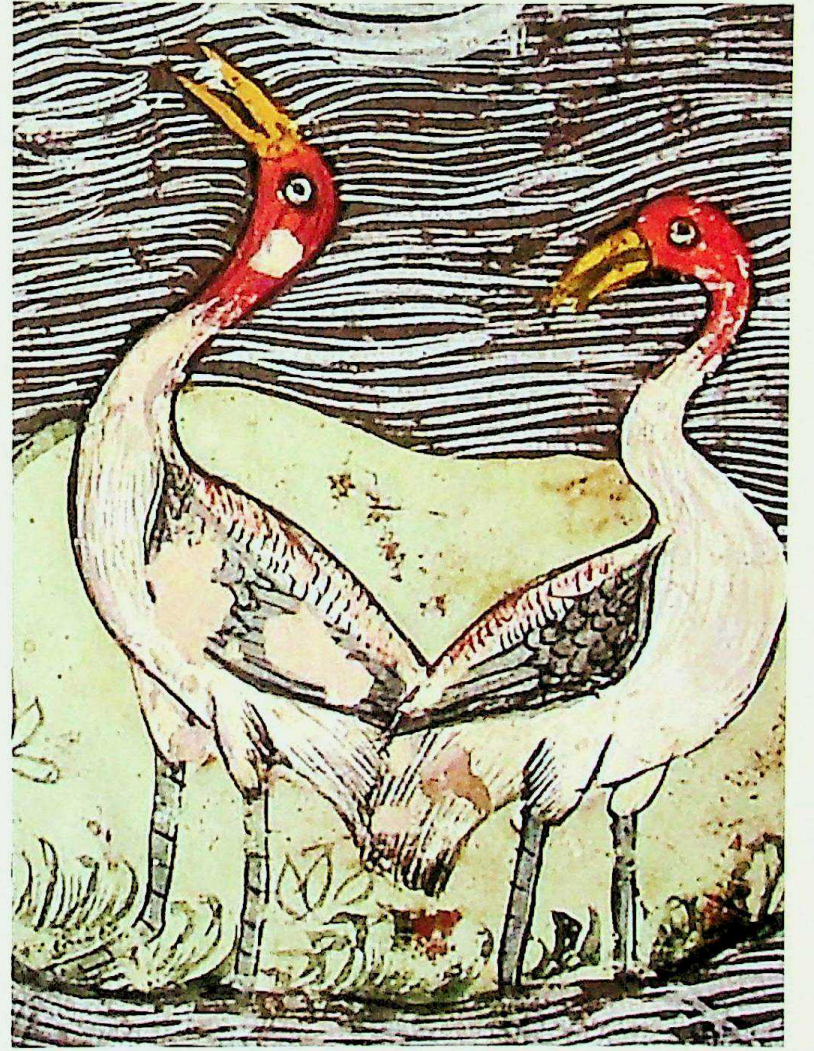
सारस क्रेन

पं.सं. : 58.36

शैली : बीकानेर

विषय : काल्पनिक पशु पर सवार देवदूत (फरिश्ता)

माप : 17.5x15.5 से.मी.

हाथी के आकार का पशु, जिस पर एक सुसज्जित देवदूत बैठा है एवं इसके आगे-आगे गरूण से मिलता-जुलता काल्पनिक पक्षी चल रहा है। पशु का शरीर विभिन्न पशु-पक्षियों जैसे बाघ, तेन्दुआ, बब्बर शेर, हाथी, बत्तख, जंगली सूअर, भेड़, खरगोश आदि से मिलकर बना है।
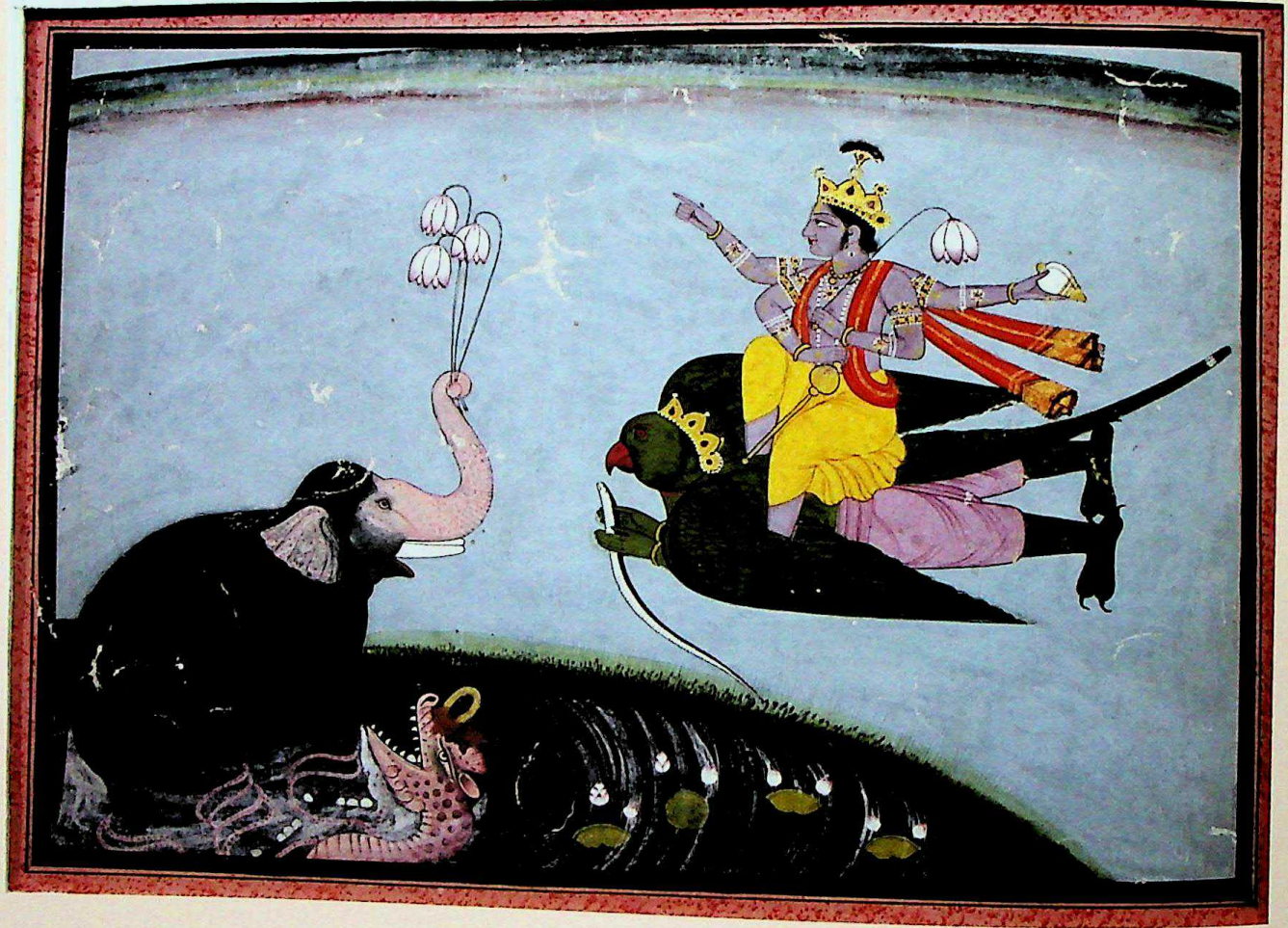
पं.सं. : 58.234

विषय : गजेन्द्र मोक्ष

लघुचित्र में गरुण पक्षी पर श्री कृष्ण आसीन हैं एवं नदी में गजेन्द्र हाथी का पैर एक घड़ियाल के आकार के पशु के मुँह में है। गरुण के हाथ में एक सांप है। यह दृश्य गजेन्द्र मोक्ष घटना से सम्बन्धित है।

हाथी

पं.सं. : 59.154

शैली : मुगल शैली

विषय : कागज पर लघुचित्र

माप : 27.5x24.5 से.मी.

जंगली सूअर शेरनी (Lioness) पर आक्रमण कर रहा है, यद्यपि शेर (Lion) भागता हुआ दिख रहा है। एक दूसरा जंगली सूअर (Wild Boar) मिट्टी के ढूहे के पीछे दिख रहा है।

जंगली सूअर द्वारा शेरनी पर आक्रमण
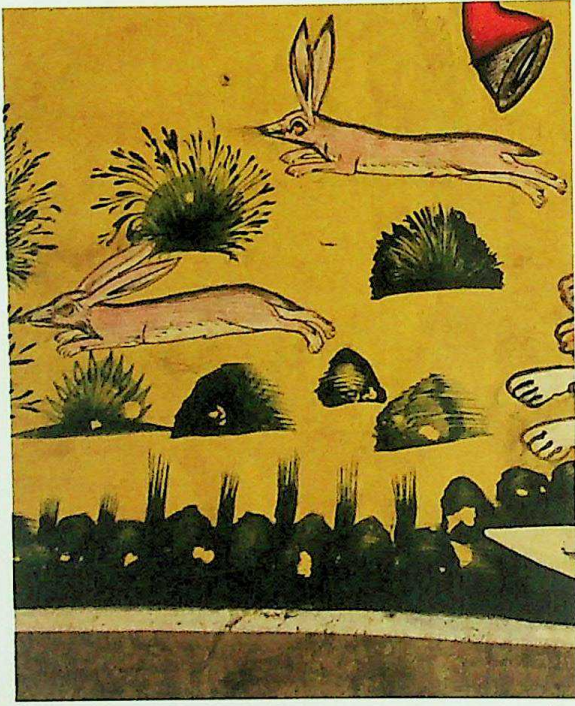
खरगोश

पं.सं. : 59.81

शैली : जोधपुर शैली

विषय : महिला द्वारा बाज़ की सहायता से शिकार

माप : 25x20.5 से.मी.

घोड़े पर सवार राजकुमारी अपनी सखी और बाज़ पक्षी तथा कुत्तों के साथ पक्षियों का शिकार कर रही है। बाज़ (Hawk) द्वारा कुछ पक्षियों पर आक्रमण किया जा रहा है। सखी के हाथ में भी एक बाज़ पक्षी है।
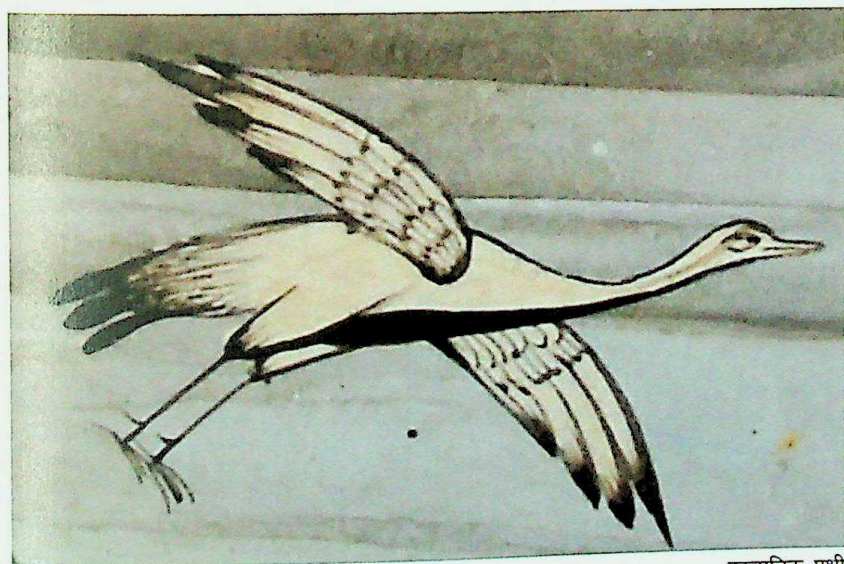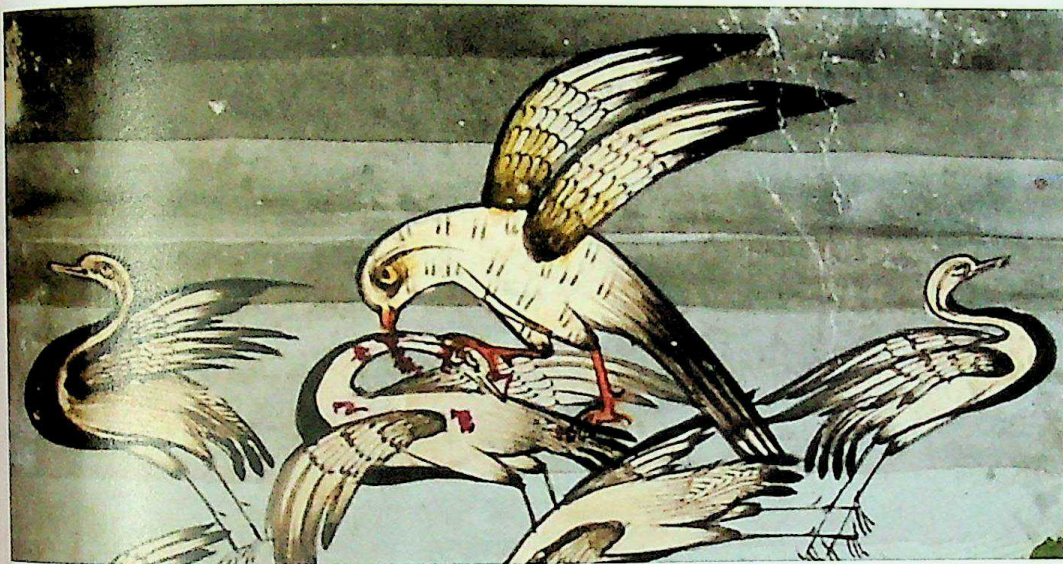
काल्पनिक पक्षी

बाज़

पं.सं. : 59.123/2

शैली : कम्पनी

विषय : ऊँट की सवारी

कम्पनी शैली की विशेषताओं से युक्त चित्र की पृष्ठभूमि का रंग अत्याधिक फीका है। ऊँट और उस पर सवार पुरूष का चित्रण अत्यन्त ही जीवन्त है।
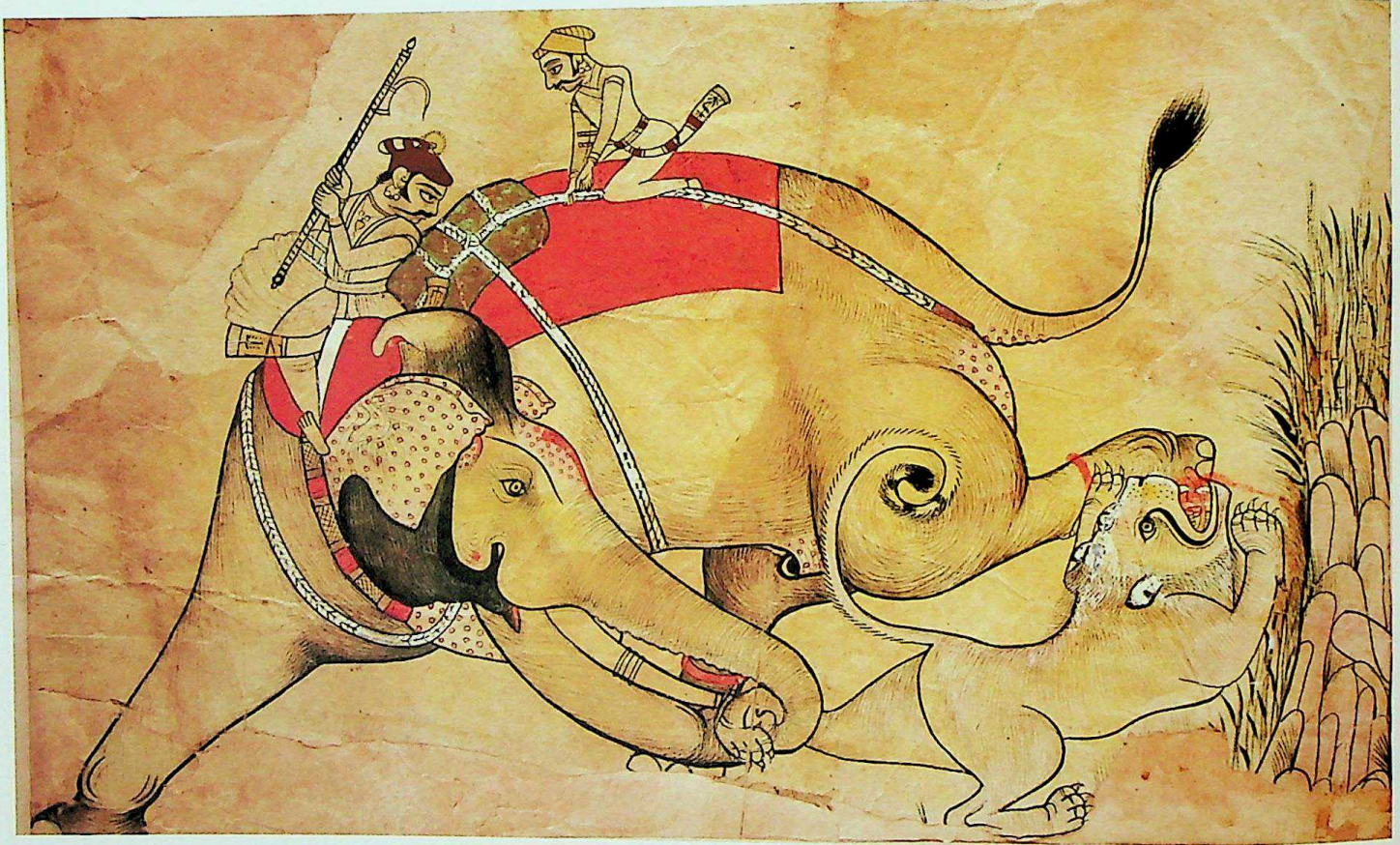
पं.सं. : 60.291

शैली : बूंदी

विषय : शेर और हाथी का युद्ध

यद्यपि पशु एवं मानवाकृतियों का आकार सटीक नहीं है, परन्तु दृश्य बहुत ही जीवन्त है। इसमें शेर द्वारा हाथी पर आक्रमण किया जा रहा है, जबकि हाथी भी अपने को बचाने का प्रयास कर रहा है एवं महावत आक्रामक मुद्रा में है।
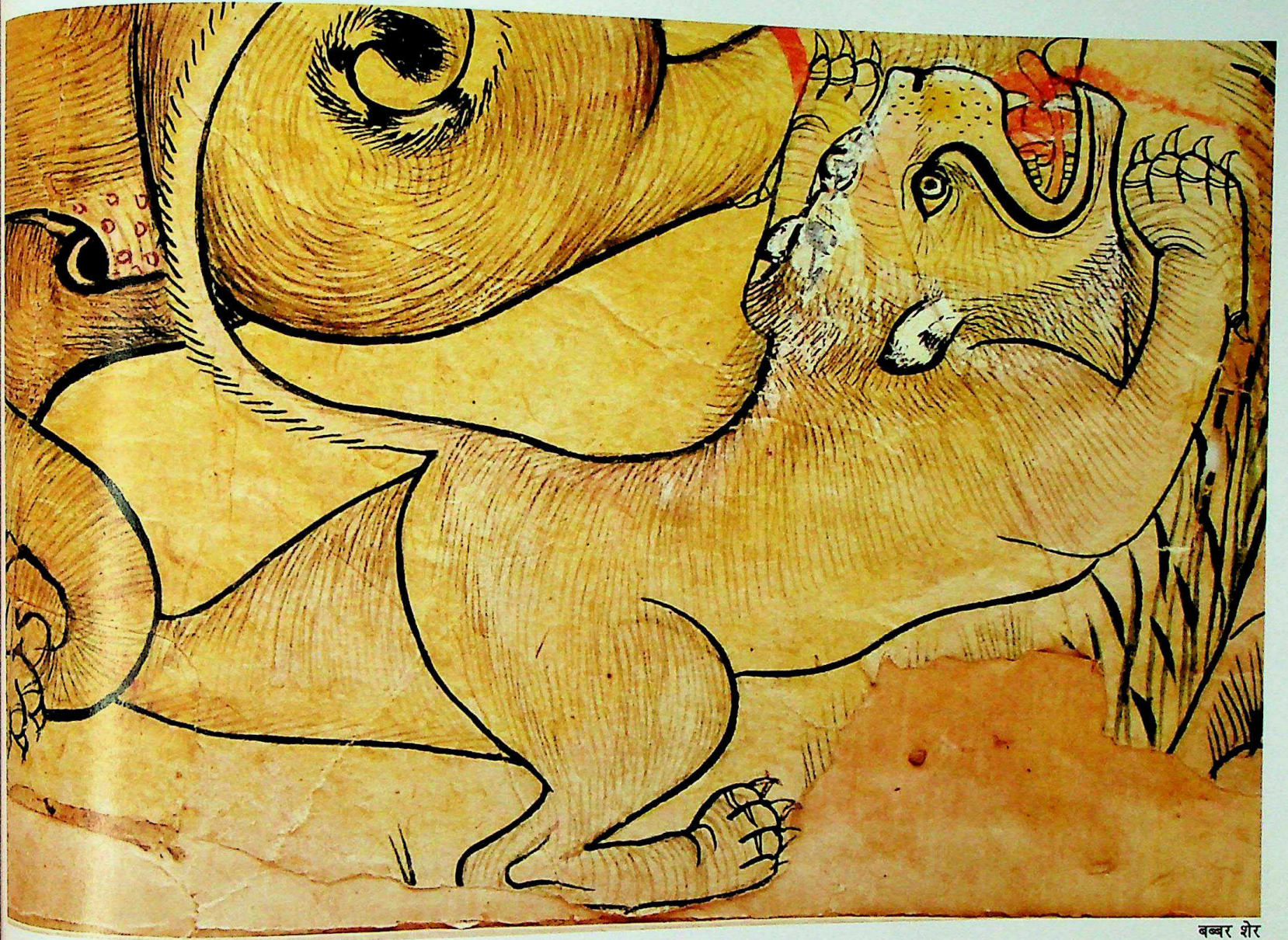
बब्बर शेर

सियार
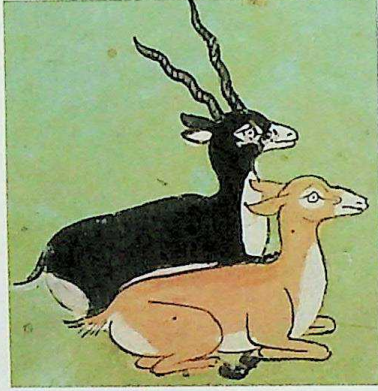
काला हिरन

पं.सं. : 60.134

शैली : मेवाड़

विषय : पंचतंत्र की कथा

माप : 41.5x18.5 से.मी.

लाल रंग के बार्डर युक्त लघुचित्र में तीन अलग-अलग दृश्य पंच-तंत्र की कथाओं पर चित्रित हैं। प्रथम दृश्य में राजा अपने दरबारियों से कुछ बात कर रहा है, दूसरे दृश्य में दो व्यक्ति एक दूसरे से बात कर रहे हैं। तीसरे दृश्य में बाघ (Bengal Tiger) द्वारा तेंदुआ (Leopard), काला हिरन (Black Buck) सांभर (Sambhar) एवं भेड़िया (Jackal) आदि चित्रित हैं।

तेंदुआ

बारहसिंगा

खरगोश

बाघ
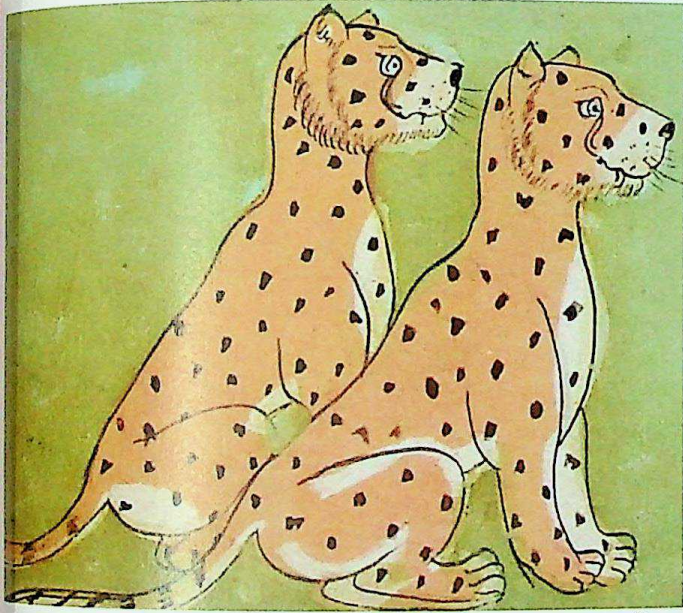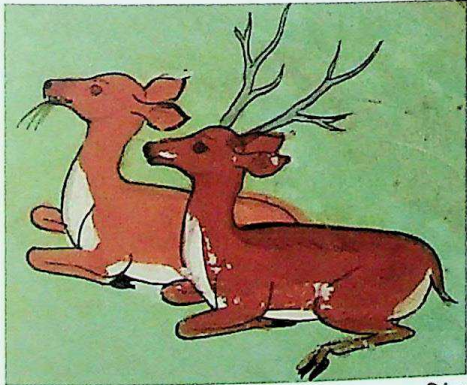
पं.सं. : 59.244

शैली : राजस्थानी

विषय : बाघ द्वारा बकरी का शिकार

माप : 27.5x18.5 से.मी.

राजस्थानी शैली के इस लघुचित्र में एक बाघ (Bangal Tiger) पहाड़ियों पर छलांग लगाते हुए बकरी पर आक्रमण कर रहा है। पृष्ठभूमि में कुछ लोग बाघ पर बंदूक से वार कर रहे हैं।

बाघ
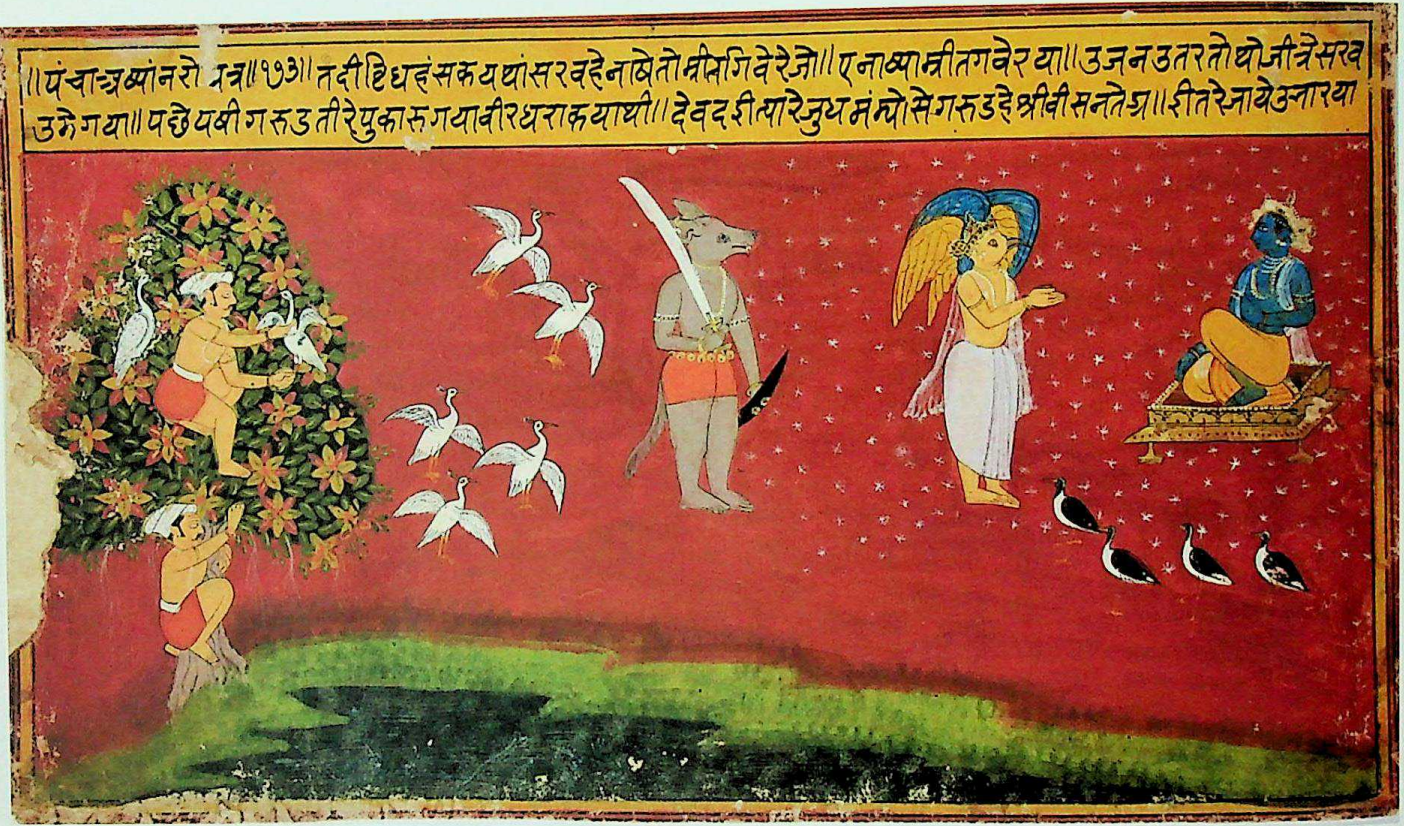
पं.सं. : 59.226

शैली : मेवाड़

विषय : पंचतंत्र की कथा

माप : 39.5x24 से.मी.

शिकारी पेड़ पर चढ़ कर बगुलों को पकड़ रहे हैं, जबकि बगुले (Egretts) उड़ कर भाग रहे हैं। वहीं दूसरी ओर भगवान गरूण श्री कृष्ण से कुछ निवेदन कर रहे हैं। श्री कृष्ण के आसन के पास कुछ टिटिहरी (Red Wattled Lapwing) पक्षी टहल रहे हैं।

बगुला
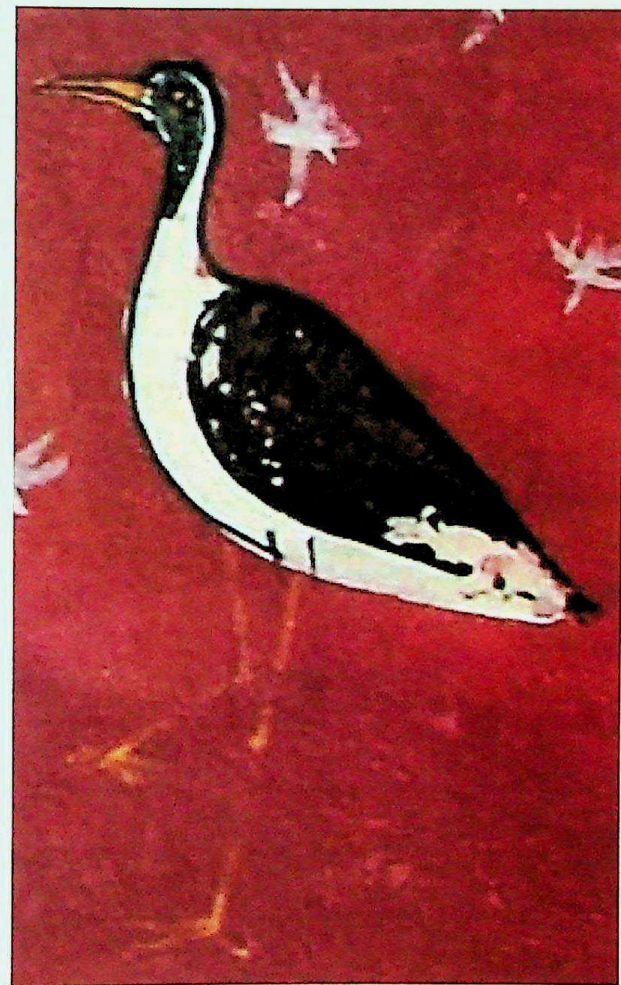
टिटिहरी

जंगली कौआ

पं.सं. : 60.319/5

शैली : बिलासपुर

विषय : राग विहंग

माप : 21.5x15.5 से.मी.

कौवा को प्रेम के संदेश का वाहक मान कर राग विहंग गाया जाता है। प्रेम में ओत-प्रोत प्रेमी अपनी प्रेयसी के लिये गाना गा रहा है एवं कौवा (Common Crow and Jungle Crow) उसके चारों ओर मण्डरा रहे हैं।

कौवा
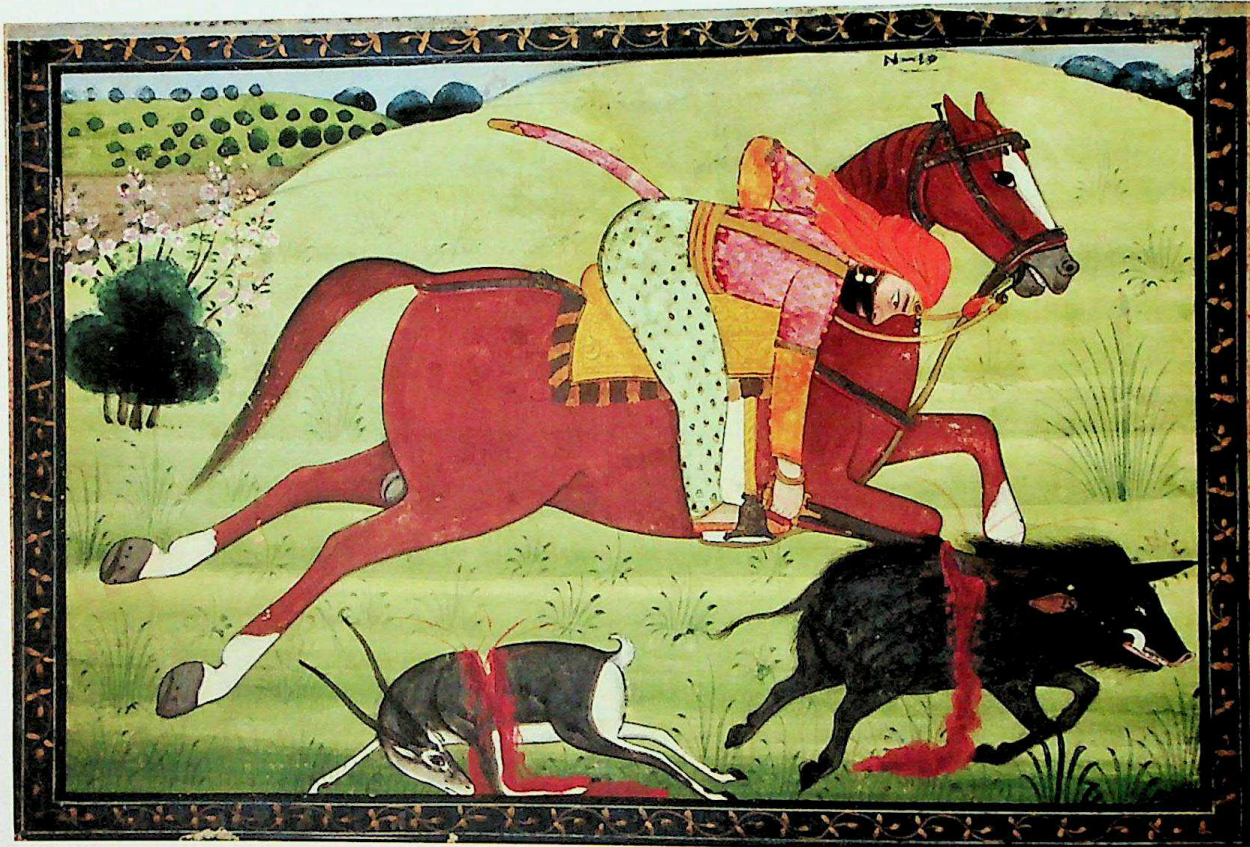
पं.सं. : 62.43

शैली : सिख

विषय : जंगली सुअर का शिकार

माप : 21.5x15.5 से.मी.

राजसी वेश-भूषा में एक घुड़सवार जंगल में काले हिरन (Black Buck) एवं जंगली सुअर (Wild Boar) का शिकार कर रहा है।
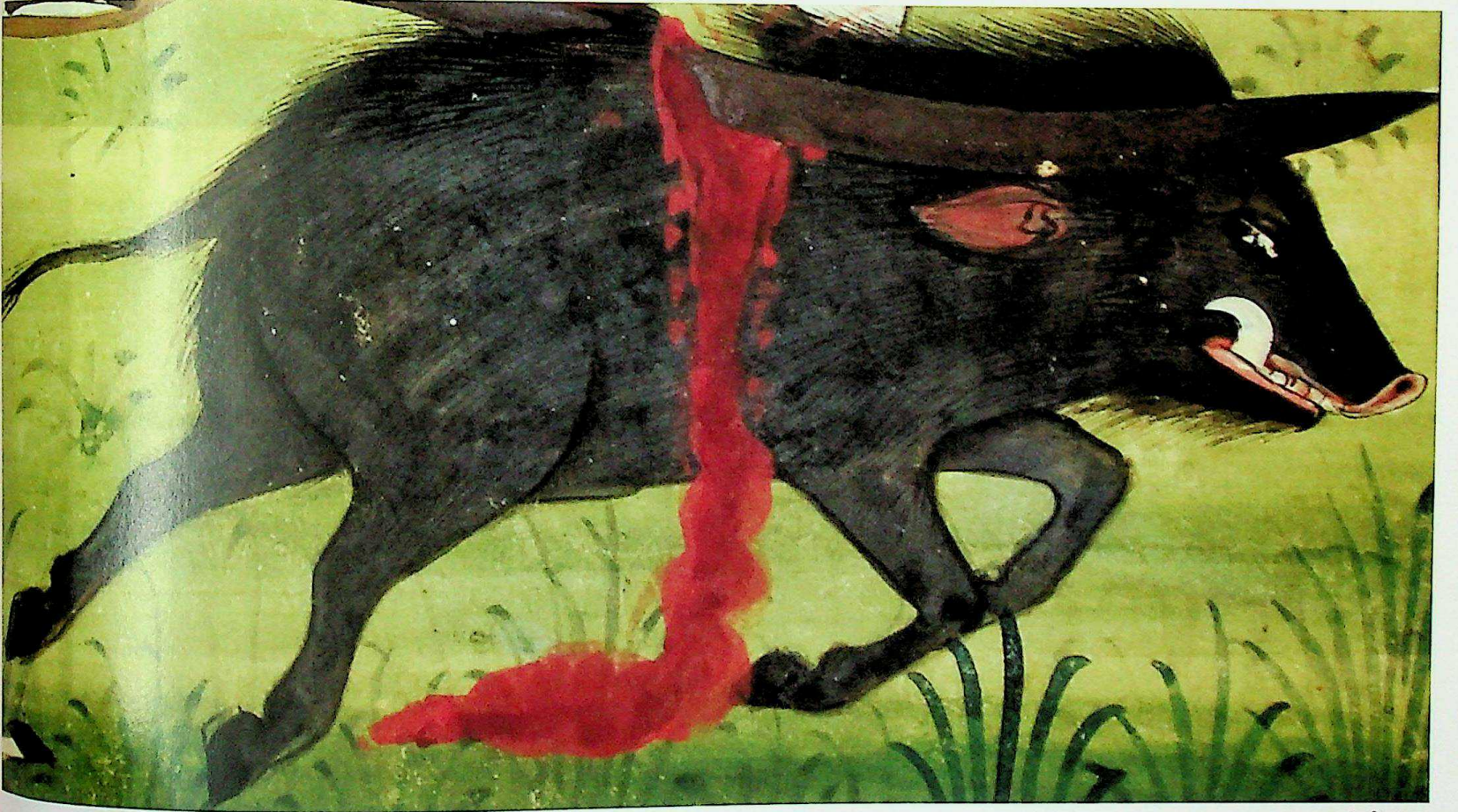
जंगली सूअर

पं.सं. : 62.102

शैली : मारवाड़

विषय : बाघ द्वारा भैंस पर आक्रमण

माप : 20.5x13 से.मी.

चित्र में एक बाघ (Bengal Tiger) आक्रामक रूप में जंगली भैंसे (Bison) का शिकार कर रहा है। यहां पर बाघ के शिकार का विशिष्ट रूप अंकित है, जिसमें बाघ भैंसे की गर्दन पर वार करता हुआ चित्रित है।
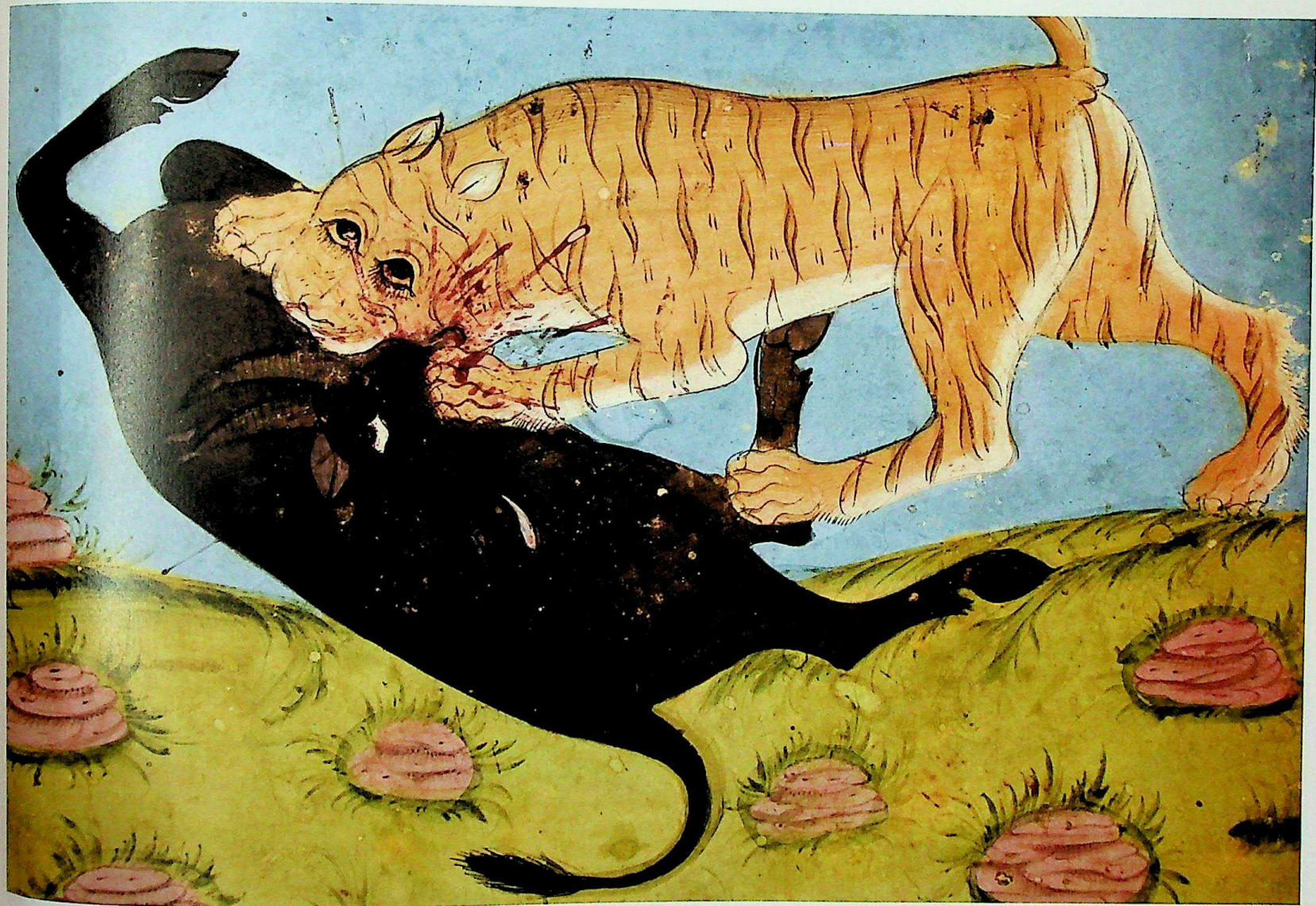
बाघ द्वारा भैंसे का शिकार

पं.सं. : 76.135/2

विषय : स्केचिंग पैटर्न

कलाकारों/चित्रकारों द्वारा अपनी स्मृति एवं दूसरे लघुचित्रों को बनाने में जानकारी के रूप में उपयोग में लाये जाने हेतु स्केच तैयार किया जाता था, जिसमें विभिन्न पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों का पेन्सिल से बना स्केच सुरक्षित रखा जाता था।

पं.सं. : 76.143

विषय : सरस्वती लाइन ड्रांइग

देवी सरस्वती अपने वाहन हंस (Mute Swan) पर बैठी हैं। कमल पुष्प पर आसीन चतुर्भुजी देवी के एक हाथ में पाण्डुलिपि एवं दूसरे हाथ में वीणा है।

हंस

पं.सं. : 41.66

शैली : कांगड़ा शैली

विषय : नायिका भेद

माप : 26x19.5 से.मी.

लघुचित्र में एक ओर नायक और नायिका को संवाद करते हुए चित्रित किया गया है एवं दूसरी ओर सेविकाएँ एक दूसरे से बात करते हुए दिख रही हैं। चित्र की पृष्ठभूमि में अति सुन्दर भवन, पेड़-पौधे, पहाड़ एवं पशु-पक्षी यथा-हाथी (Asian Elephant), हिरन (Dear), बाघ (Bengal Tiger), बटेर (Quail) तथा भवन के छज्जे पर दो पक्षियों सम्भवतः बार्बेत (Barbett) आदि को चित्रित किया गया है।

इसके अतिरिक्त पिंजड़े में तोता (Parrot) एवं मैना (Hill Myna) का सुन्दर अंकन है।

बाघ

बैबलर

तोता

बटेर

मैना
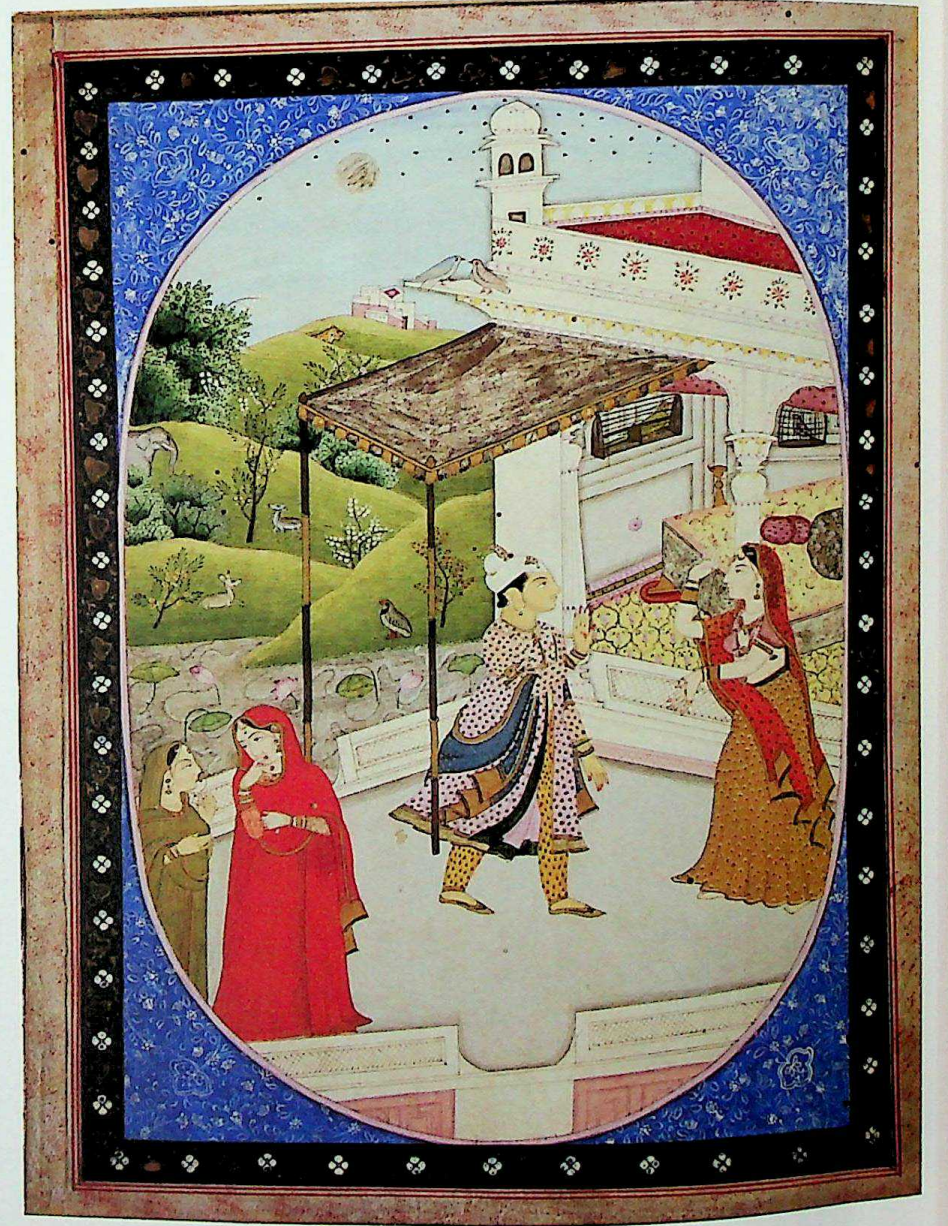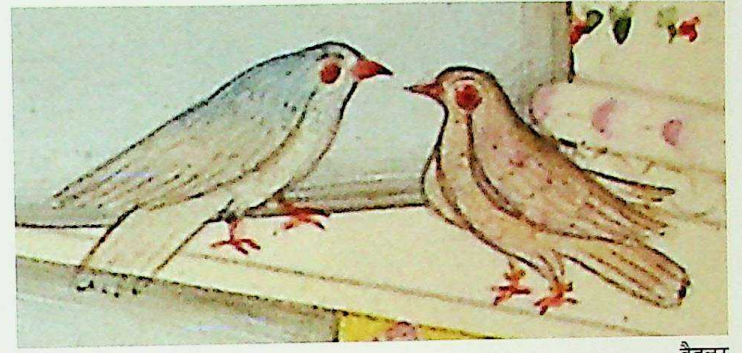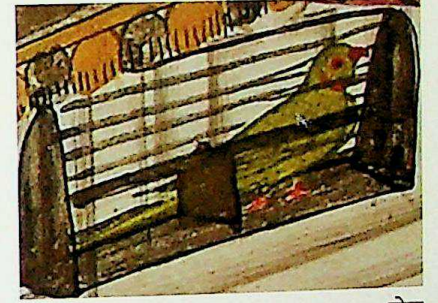
हाथी एवं हिरन

राज्य संग्रहालय, लखनऊ
बनारसी बाग, हज़रतगंज, लखनऊ–226001
फोन : 0522–2206157, फैक्स : 2206158 | ईमेल : statemuseumlucknow@gmail.com